SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 23 • ISSUE 01 • MARCH 2024

हिन्दी मासिक

मार्च 2024

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

रमज़ानुल मुबारक

मुबारक हो, ज़िन्दगी में एक बार फिर आपको रमज़ान की दौलत हासिल हो रही है, ईमान का मौसम और तक़्वे की फसल का ज़माना आ गया, इस ख़ैर व बरकत वाले मौसम के इतने एहसानात हैं कि अगर कोई गिनना चाहे तो कोई गिन नहीं सकता,दिलों में नरमी, आँखों में नमी, मिजाज़ में संयमता, एक दूसरे को मॉफ करने की ओर झुकाव, दुआओं की ज़्यादती, कुर्आन की तिलावत पर तवज्जोह, फराएज़ की अदायगी में चुस्ती, तरावीह की बरकतें, मग़फिरत की तलब, रहमत की आरज़ू, यह सब की सब रमज़ान की सौग़ातें हैं।

मौलाना अब्दुल्लाह अब्बास नदवी रह.

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
ह़ज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई ह़सनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

मार्च 2024 वर्ष 23 अंक 01

रमज़ान

अल्लाह के इनआ़मात में से एक इनआ़म रमज़ानुल मुबारक का महीना है जिसमें एक एक नेकी का सत्तर से सात सौ गुना तक अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को सवाब अता फरमाता है, उसका पहला अश्रा रहमत का, दूसरा मग़फ़िरत का, और तीसरा अश्रा जहन्नम से आज़ादी का है। इस मुबारक महीने में नेक अमल को आसान बनाने के लिए शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है।

(हज़रत मौलाना सै0 मु0 वाजेह रशीद हसनी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
रोज़ा एक हमत्वपूर्ण इबादत	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	11
मुसलसल नूर बरसाता हुआ (पद्य)	मौलाना सै0 मु0 सानी हसनी नदवी रह0	13
रमज़ानुल मुबारक का पैग़ाम	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी रह0	14
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	16
कुरआन का महीना, रमज़ान	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	23
काल चक्र बदल रहा है?	इं0 जावेद इक़बाल	26
रमज़ान इबादत का महीना	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	29
ऐलाने मिल्कियत	इदारा	31
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	32
ब्रेन ड्रेन (प्रतिभा पलायन)	प्रो0 अतीक़ अहमद फ़ारूक़ी	34
ताजुल मसाजिद–भोपाल	शमीम इक़बाल खाँ	36
स्वास्थ्य	अशोक खरवार, आयुर्वेदाचार्य	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	40
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	41

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-यूसुफ़:-

अनुवादः—

फिर जब उसने औरतों की मक्कारी सुनी तो सबको बुला भेजा और उनके लिए मसनद सजाई और उनमें से हर एक के हाथ में एक छुरी दे दी और यूसुफ़ से कहा कि ज़रा उनके सामने तो आओ, बस जब उन औरतों ने उनको देखा तो उनको कल्पना से बढ़ कर पाया (और हक्का बक्का रह गईं) और अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं कि हाय रे अल्लाह! यह इंसान नहीं है यह तो कोई शालीन फ़रिश्ता है(31) औरत ने कहा यही वह है जिसके बारे में तुम मुझे बुरा—भला कह रही थीं और मैंने इससे काम वासना की चाहत की तो यह बच निकला और अगर उसने मेरा कहना न माना तो अवश्य वह जेल में डाल दिया जाएगा और बेहैसियत हो कर रह जाएगा(32) यूसुफ ने कहा ऐ मेरे रब! यह जो मुझे (दुष्कर्म की ओर) बुला रही हैं उसके मुकाबले में मुझे जेल ही पसंद है और अगर तूने मुझे इनकी चाल से दूर न रखा तो मैं उनका शिकार हो जाऊँगा और नादानों में हो कर रह जाऊँगा(33) बस उनकी दुआ उनके पालनहार ने सुन ली और उन औरतों की चाल उनसे दूर कर दी बेशक वह खूब सुनता खूब जानता है[1](34) फिर निशानियाँ देख लेने के बाद भी लोगों की राय यही ठहरी कि यूसुफ को एक अवधि के लिए जेल में ही डाल दिया जाए[2](35) और उनके साथ जेल में दो और नवयुवकों ने प्रवेश किया, उनमें से एक ने कहा मैं अपने आपको देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ और दूसरा बोला कि मैं अपने आपको देखता हूँ कि मैं सिर पर रोटियाँ रखे हूँ, पक्षी उसमें से खा रहे हैं आप हमें इसका मतलब बता दीजिए, हम देखते हैं कि आप बड़े बुजुर्ग हैं[3](36) उन्होंने कहा कि जो खाना तुम्हें मिलता है वह आने भी नहीं पायेगा कि मैं उसके आने से पहले—पहले तुम्हें इसका मतलब बता दूँगा, यह उन चीज़ों में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाई हैं, मैंने उन लोगों के तरीक़े को छोड़ रखा है जो अल्लाह को नहीं मानते और आख़िरत का भी इनकार करते हैं(37) और मैंने अपने बाप दादा इब्राहीम और इस्हाक़ व याकूब का धर्म पकड़ रखा है, हमारा यह काम नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को भी साझी ठहराएं और यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का एहसान है लेकिन अधिकतर लोग शुक्र अदा नहीं करते हैं(38) ऐ मेरे जेल के दोनों साथियो! कई माबूद (पूज्यनीय) अलग—अलग बेहतर हैं या एक अकेला अल्लाह जो ज़बरदस्त है(39) तुम अल्लाह को छोड़ कर जिसको पूजते हो वे सिर्फ़ नाम ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप—दादा ने रख छोड़े हैं अल्लाह ने इसकी कोई दलील नहीं उतारी, राज केवल अल्लाह का है, उसने आदेश दिया है कि तुम केवल उसी की पूजा करो, यही सीधा रास्ता है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं[4](40) ऐ मेरे जेल के

दोनों साथियो! तुममें एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा और जो दूसरा है तो वह फांसी पर चढ़ाया जाएगा तो पक्षी उसका सर खाएंगे, जिस चीज़ को तुम पूछ रहे हो उसका फ़ैसला निर्धारित हो चुका है(41) और जिसके बारे में यूसुफ़ का विचार था कि वह उन दोनों में बच रहेगा उससे उन्होंने कहा अपने स्वामी के सामने मेरा वर्णन करना बस शैतान ने उसको भुला दिया कि वह अपने स्वामी से उल्लेख करे तो यूसुफ़ को जेल में कई वर्ष रहना पड़ा[5](42) और राजा ने कहा कि मैं देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सूखी हैं, ऐ दरबारियो! अगर तुम सपने का मतलब बताते हो तो मुझे मेरे सपने का मतलब बताओ(43)

तफ़सीर (व्याख्या):–

1. औरतें हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देख कर खुद ही दीवानी हो गईं और ज़ुलैख़ा को अवसर मिला, साफ़ कह दिया कि मैंने इसका इरादा कर रखा था और अगर इसने न माना तो इसको जेल की हवा खानी पड़ेगी और औरतें भी उनको समझाने में लग गईं कि अपनी मालिकिन की बात मान लो, खुद उन महिलाओं का हाल यह था कि सबके दिल उन्हीं की ओर आकर्षित हो रहे थे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जब यह माहौल देखा तो अल्लाह से अपनी रक्षा की दुआ की और कहा कि इनसे तो जेल ही बेहतर है।

2. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बेगुनाह होने के बहुत से प्रमाण थे परन्तु इसके बाद भी उन्होंने बेहतर यही समझा कि उनको जेल भेज दिया जाए ताकि लोग समझें कि दोष यूसुफ ही का था।

3. किताबों में है कि दोनों राजा के कर्मचारी थे, एक शराब पिलाता था दूसरा रसोइया था, दोनों को राजा को ज़हर देने के आरोप में गिरफ़्तार किया गया था, दोनों जेल में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के श्रद्धावान हो गये और सपने का मतलब पूछा।

4. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले तो उनको तसल्ली दी कि मैं जल्द ही तुम्हें सपने का मतलब बताऊँगा लेकिन उनके भरोसे और संबंध के कारण ज़रूरी समझा कि उनको सत्य धर्म के विषय में समझायें, यह पैग़म्बरों की शुभ नीति है कि वे अल्लाह की ओर बुलाने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नही देते।

5. धर्म प्रचार का कर्तव्य निर्वाहन के बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनको सपने का मतलब बताया कि शराब पिलाने वाला तो बहाल हो जाएगा और खाना पकाने वाला सज़ा पायेगा, उसको फाँसी दी जाएगी, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को वही के द्वारा इसका विश्वास हो गया, इसलिए कहा कि यह बातें निर्धारित हो चुकी हैं, जिसके बारे में उनको जानकारी थी कि वह फिर राजा का दरबारी सेवक बनेगा उससे उन्होंने कहा कि ज़रा मेरा वर्णन करना, लेकिन शैतान ने उसको भुला दिया और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को और अधिक कई वर्ष जेल में रहना पड़ा, जब राजा ने सपना देखा तो उस व्यक्ति को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की याद आई।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

बच्चों का पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का बयान

अल्लाह का फरमान है:–

अनुवादः–

ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को (जहन्नम की) आग से बचाओ।

(सूरः तहरीम–6)

और फरमान है–

अनुवादः–

और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और उस पर जमे रहो।

(सूरः ताहा–132)

हर आदमी ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछ होगीः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना, तुममें का हर आदमी ज़िम्मेदार है और हर एक से उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जायेगा, हाकिम रैय्यत (प्रजा) का ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछ होगी, मर्द ज़िम्मेदार है और उससे अपनी रैय्यत के बारे में पूछा जाएगा, औरत अपने पति के घर की ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा, खादिम (सेवक) अपने मालिक के माल का ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत हसन रज़ि0 को सद्के़ की खुजूर खाने पर रोकः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि हज़रत हसन बिन अली रज़ि0 ने सदके का एक खुजूर उठा कर मुँह में रख लिया, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः नहीं, नहीं, उसको फेंक दो, तुम्हें मालूम नहीं कि हम लोग सद्के का माल नहीं खाते हैं। (बुखारी व मुस्लिम)

खाने के आदाब (विधि–विधान):–

हज़रत अम्र बिन अबू सल्मा रज़ि0 से रिवायत है कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 की परवरिश (भरण–पोषण) में था, मेरा हाथ प्लेट में इधर–उधर जाता था, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः बच्चे! अल्लाह का नाम लेकर खाओ, सीधे हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ।

(बुखारी व मुस्लिम)

बच्चों को नमाज़ का हुक्मः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल–आस रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः सात साल की उम्र में अपने बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो, और जब दस साल के हो जाएं तो नमाज़ छोड़ने पर उनको मारो, और उनके बिछौने को अलग कर दो। (अर्थात दस साल या उस से ज़्यादा उम्र के बच्चे एक बिछौने पर न सोने पाएं)।

(अबू दाऊद)

बच्चे को अदब और अच्छा संस्कार सिखाना एक साअ सद्का करने से बेहतर है:–

हज़रत जाबिर बिन समुरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः आदमी अपने बच्चे को अदब सिखाये यह उससे बेहतर है कि वह एक ''साअ'' सदका करे। (तिर्मिज़ी)

एक साअ– आज के हिसाब से 2176 ग्राम वजन के बराबर गेहूँ (हदीसे नबवी पेज नं0 83 हाशिया)

अच्छा अदब बेहतरीन तोहफा है:–

हज़रत अय्यूब बिन मूसा रज़ि0 अपने दादा से (सुन कर) अल्लाह के रसूल सल्ल0 की हदीस बयान करते हुए कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः कोई बाप अपने बच्चे को अच्छे अदब (संस्कार) से बेहतर कोई तोहफा नहीं देता।

(तिर्मिज़ी)

लड़की और लड़के का समान रूप से पालन–पोषण करने पर जन्नतः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– जिसको लड़की हो और वह उसको ज़िन्दा (दफन) न करे, (उसकी हत्या न करे) और उस पर अपने लड़के को भी तरजीह न दे तो अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाखिल फरमाएंगे।

(अबूदाऊद)

लड़कियों के पालन–पोषण करने वालों की श्रेष्ठताः–

हज़रत अनस रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– जिसने दो लड़कियों को पाला–पोसा, यहां तक कि वो बड़ी (व्यस्क) हो गईं, क़यामत के दिन मैं और वह साथ आएंगे और फिर आप सल्ल0 ने अपनी अंगुलियों को मिला लिया।

(मुस्लिम)

तीन लड़कियों का सही पालन–पोषण करने वाला जन्नती है:–

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– जिसने तीन लड़कियों का पालन पोषण किया, उनको अदब और तहज़ीब सिखाया (अच्छा संस्कार दिया) और शादी कर दी, और उनके साथ अच्छा सुलूक किया तो उसके लिए जन्नत है। (अबूदाऊद)

बेटी की कफालत (भरण–पोषण) सद्क़ा है:–

हज़रत नोमान बिन मालिक रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– क्या मैं तुमको सबसे बेहतर सद्क़ा (दान) न बता दूं, वह तुम्हारी बेटी है जिसका खर्च तुम्हारे ही ज़िम्मे हो और तुम्हारे सिवा कोई उसके लिए कमाने वाला न हो।

(इब्नि माजा)

औलाद में बराबरी का हुक्मः–

हज़रत नोअमान बिन बशीर रज़ि0 बयान करते हैं कि उनके वालिद उनको लेकर अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास गये और कहा– मैंने इस लड़के को अपना एक गुलाम दे दिया है। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने पूछाः क्या आपने अपने सब लड़कों के साथ ऐसा ही किया है? वालिद साहब ने कहाः नहीं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– अल्लाह से डरो और अपनी औलाद में इन्साफ करो, फिर मेरे वालिद साहब मुझको लेकर वापस आ गये और वह तोहफा वापस ले लिया।

(बुखारी व मुस्लिम)

❖❖❖

अपनों के एहसान से डर

शुऐब अहसन, अहसन आजमी

दुशमन दाना हो तो ठीक।
पर यारे नादान से डर।
खुश आहँगी पर मत जा।
मुरली की हर तान से डर।।
गैरों से उम्मीद न रख।
अपनों के एहसान से डर।।
देख खुदी का सौदा है।
मान से डर, सम्मान से डर।।
कैसे–कैसे ख़ाक़ हुए।
अहसन झूठी शान से डर।।

सम्पादकीय

रोज़ा एक महत्वपूर्ण इबादत

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

एक इन्सान जब सच्चे दिल से कलिमा तय्यबा पढ़ लेता है यानी अल्लाह और उसके अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आता है तो उसके परिणाम स्वरूप उस पर चार इबादतें फ़र्ज़ हो जाती हैं– नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज। यदि कोई मुसलमान व्यक्ति इन इबादतों के फ़र्ज़ होने का इन्कार कर दे तो वह इस्लाम के दायरे से निकल जाएगा, यह चारों इबादतें फ़र्ज़ होने में बराबर हैं।

अरबी भाषा में रोज़े को ''सौम'' कहते हैं जिसका अर्थ है किसी काम से अपने को रोकना और बचाना, यह इसका शाब्दिक अर्थ है, परन्तु शरीअत की परिभाषा में सुबह सादिक़ से सूरज के डूबने तक खाने पीने और बीवी से हमबिस्तरी करने से सिर्फ़ अल्लाह की इबादत की नीयत से उसी की प्रसन्नता के लिए रुके रहने को सौम अर्थात रोजा कहा जाता है, यह इबादत चूंकि दिल की पवित्रता और स्वच्छता के लिए बहुत अहम है इसलिए उसे तुमसे पहली उम्मतों पर भी फ़र्ज़ किया गया था, इसका सबसे बड़ा उद्देश्य ''तक़वा'' अर्थात अल्लाह का ख़ौफ़ है तक़वा इंसान के चरित्र को संवारने में मौलिक रोल अदा करता है। रोज़ा रखने के लिए ''रमज़ान'' का महीना विशेष है, यदि किसी उज़्र शरई की वजह से किसी ने रमज़ान के अलावा किसी दूसरे महीने में रोज़े की क़ज़ा की तो रोज़े की अदाएगी तो हो जाएगी, लेकिन रोज़े का वह अज्र व सवाब जो रमज़ान के महीने में मिलता है वह नहीं मिलेगा, इस बरकत और रहमत वाले महीने का अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत बेचैनी से इन्तिज़ार करते थे और दुआ फ़रमाते थे कि जल्द उस महीने तक पहुंच जाएं, अपनी उम्मत को रमजानुल मुबारक के आने की ख़बर देते थे, ताकि लोग गफ़लत में न रहें और पूरा फ़ाइदा उठाएं। इस संबंध में एक हदीस नबवी पेश की जा रही है जिसको सुनने और पढ़ने के बाद अन्दाज़ा होता है कि रमज़ान शरीफ़ और रोज़े की क्या अहमियत और फ़ज़ीलत है ''हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शअ़बान की आख़िरी तारीख़ में हम लोगों को वअ़ज़ फ़रमाया कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है जो बहुत बड़ा महीना है, बहुत मुबारक महीना है, उसमें एक रात है (शबे क़द्र) जो हज़ार महीनों से बढ़ कर है, अल्लाह तआला ने उसके रोज़े को फ़र्ज़ फ़रमाया और उसके रात के क़ियाम (यानी तरावीह) को सवाब की चीज़ बनाया है, जो शख़्स इस महीने में किसी नेकी के साथ अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करे, ऐसा है जैसा कि ग़ैर रमज़ान में 70 फ़र्ज़ अदा करे, यह महीना सब्र का है और सब्र का बदला जन्नत है, और यह महीना लोगों के साथ हमदर्दी करने का है, इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ा दिया जाता है, जो शख़्स किसी रोज़ेदार का रोज़ा इफ़तार कराए

उसके लिए गुनाहों के माफ़ होने और आग से आज़ादी का सवाब होगा और रोज़ेदार के सवाब के समान उसको सवाब होगा, मगर उस रोज़ेदार के सवाब से कुछ कम नहीं किया जाएगा, सहाबा रज़ि0 ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हम में से हर शख़्स तो इतनी ताक़त नहीं रखता कि रोज़ेदार को इफ़तार कराए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि (पेट भर खिलाने पर मौकूफ़ नहीं) यह सवाब तो अल्लाह तआला एक खजूर से कोई इफ़तार करा दे या एक घूँट पानी पिला दे या एक घूँट लस्सी पिला दे, इस पर भी अता फ़रमा देते हैं। यह ऐसा महीना है कि उसका शुरु का हिस्सा अल्लाह की ''रहमत'' है, बीच का हिस्सा ''मग़फ़िरत'' है, और आख़िरी हिस्सा ''आग से आज़ादी'' है, जो शख़्स इस महीने में अपने नौकर के बोझ को हलका करदे, हक़ तआला शानुहू उसकी मग़फ़िरत फ़रमाते हैं और आग से आज़ादी फ़रमाते हैं, चार काम इस में बहुत ज़्यादा किया करो जिनमें से दो काम अल्लाह को खुश करने के लिए और दो काम ऐसे जिसके बिना तुम्हें छुटकारा नहीं, पहले दो काम कलम–ए–तय्यबा और इस्तिग़फ़ार खूब पढ़ो, दूसरे दो काम यह हैं कि जन्नत को तलब करो और आग से पनाह मांगो, जो शख़्स किसी रोज़ेदार को पानी पिलाए हक़ तआला क़यामत के दिन मेरे हौज़ से उसको ऐसा पानी पिलाएंगे जिसके बाद जन्नत में दाखिल होने तक प्यास नहीं लगेगी। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शाबान की आख़िरी तारीखों में यह वअ़ज़ फ़रमाया जिसके द्वारा आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ानुल मुबारक का पूरा प्रोग्राम दे दिया कि रमज़ान के दिन व रात कैसे गुज़ारे जाएं, कुरआन का रमज़ान के साथ विशेष संबंध है, अल्लाह ने फ़रमाया ''रमज़ान वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया'' सूरः बक़रा आयत नं0 185 इसकी तफ़सील यह है कि रमज़ान की शबे क़द्र में ''लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर उतारा गया और वहां ''बैतुल इज़्ज़ा'' में रख दिया गया और वहां से हालात के मुताबिक़ 23 सालों में उतरता रहा (इब्ने कसीर) कुरआन की पहली आयत ''इक़रा'' जो ''ग़ारे सौर'' में नाज़िल हुई वह रमज़ान के महीने में नाज़िल हुई, इस प्रकार कुरआन का रमज़ान से विशेष संबंध है। नबी करीम सल्ल0 ने रमज़ान की रातों में हज़रत जिब्रईल अमीन के साथ कुरआन का दौर किया, इसीलिए तरावीह की नमाज़ में कुरआन का पढ़ना और सुनना मसनून है, जिस पर पूरे आलमे इस्लाम में अमल किया जाता है। रमज़ान एक मुकद्दस और बरकत वाला महीना है, जिसमें कुरआन जैसी मुक़द्दस किताब के अलावा दूसरी आसमानी किताबें और सहीफ़े नाज़िल हुए, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़े रमज़ान की पहली या तीन तारीख़ को अता हुए और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ''ज़बूर 18 या 12 रमज़ान को मिली और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरेत'' 6 रमज़ानुल मुबारक को अता हुई और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ''इनजील'' 12 या 13 रमज़ानुल मुबारक को मिली, जिससे मालूम होता है कि इस मुबारक महीने को कलामे इलाही से ख़ास मुनासबत है।

फ़रमाने नबवी के अनुकूल यदि हमारा रमज़ान गुज़र जाए तो वास्तव में हम गुनाहों से पाक साफ़ हो जाएंगे और अल्लाह के फ़रमांबरदार बन्दों में

शेष पृष्ठ ...19..पर

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

हिसाब व किताब और बदला व सजाः-

आख़िरत के अकीदे का अहम हिस्सा ये है कि इंसान को दुनिया में अपने किए हुए कामों पर बदले या सजा का यकीन हो, वो ईमान रखता हो कि हमारे हर अमल का वहाँ हिसाब लिया जाएगा, अच्छे कामों का अल्लाह की तरफ से अच्छा बदला मिलेगा, और बुरे कामों की सजा मिलेगी, और जो चाहेगा अल्लाह तआला माफ़ करेगा, इरशाद होता है–

अनुवादः– "बस जिसने जर्रा बराबर भी भलाई की होगी वो उसको देख लेगा और जिसने जर्रा बराबर भी बुराई की होगी वो उसको देख लेगा"।

(अल–ज़िलज़ालः 7–8)

ये हिसाब आखिरत के दिन होगा जिस दिन के बारे में कुरआन मजीद में कहा गया है कि वो बहुत बड़ा दिन होगा, उस दिन इंसान को उसके अमल के मुताबिक बदला दिया जाएगा, इरशाद होता है–

अनुवादः– "आज तुम्हें वही बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे थे"।

(अल–जासियहः 28)

सूरह गाशियह में इरशाद है–

अनुवादः– "यकीनन हमारी ही तरफ सबको लौट के आना है, फिर उन सब का हिसाब हमारे ही जिम्मे है"।

(अल–गाशियहः 25–26)

उस दिन पाई–पाई का हिसाब होगा, और इंसान ने जो भी अच्छे–बुरे काम किए हैं सब उसके सामने आजाएंगे, इरशाद होता है–

अनुवादः– "जिस दिन हर शख्स अपने हर भले अमल को हाजिर पाएगा"।

(आले इमरान–30)

अनुवादः– "जब आसमान फट जाएगा, और जब सितारे बिखर जाएंगे, और जब समुद्र उबाल दिए जाएंगे, और कब्रों को उथल पुथल कर दिया जाएगा, (उस वक़्त) एक एक शख़्स को मालूम हो जाएगा कि उसने क्या भेजा और क्या छोड़ा।''

(सूरः इनफितारः 1–5)

ऊपर वाली आयत में कयामत का मंजर खींच दिया गया है कि इंसान दुनिया में जो कुछ करता है उस दिन सब उस के सामने होगा, और उसका हिसाब उसको देना होगा।

इंसान दुनिया में जो कुछ करता है फरिश्ते सब लिखते जाते हैं, अल्लाह फरमाता है–

अनुवादः– "जब दो लेने वाले लेते रहते हैं, एक दाएं और एक बाएं बैठा है, जो बात भी उसके मुंह से निकलती है तो उसके पास ही एक तत्पर निगरां मौजूद रहता है"।

(काफः 17–18)

हाँ फरिश्तों का लिखना आम लेखन की तरह नहीं, वो इस तरह सुरक्षित करते हैं कि कयामत में पूरा दृश्य पेश कर दिया जाएगा, और सब कुछ निगाहों के सामने आ जाएगा, आज के ज़माने में इसका समझना कुछ दुश्वार नहीं, छोटी सी चिप (*Chip*) में न जाने क्या क्या सुरक्षित हो जाता है, और जरूरत के मुताबिक आदमी उसको देख और सुन सकता है, और न जाने क्या क्या आगे नई नई चीजें आविष्कार हो जाएं,

जिन से समझना और ज़्यादा आसान हो जाए, अल्लाह के लिए क्या मुश्किल है, उसने फरिश्तों को हुक्म दे रखा है, वो सब कुछ सुरक्षित कर रहे हैं और ये सुरक्षित करने का सिलसिला हर इंसान के साथ लगा हुआ है, कयामत में इस को निकाल कर सामने कर दिया जाएगा।

इरशाद होता है–

अनुवादः– "और हर इंसान के कर्मों को हमने उसकी गर्दन में लगा दिया है और कयामत के दिन हम उसको एक लिखित रूप में निकाल कर उसके सामने कर देंगे जिसे वो खुला हुआ पाएगा, अपना आमालनामा खुद ही पढ़, आज अपना हिसाब लेने को तू खुद ही काफी है"।

(बनी इसराईलः 13–14)

हिसाब इस तरह लिया जाएगा कि सब कुछ कच्चा– चिट्ठा सामने कर दिया जाएगा, आदमी की जबान गुंग हो जाएगी और उसके अंग गवाही देंगे ।

अनुवादः–"आज हम उनके मुंह पर मोहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पैर इसकी गवाही देंगे कि वो क्या कमाई किया करते थे"।

(सूरः यासीनः 65)

अच्छे बुरे आमाल जब सब सामने आ जाएंगे तो अल्लाह तआला उसको अपनी तराजू में तौल कर जन्नत या दोजख का फैसला फरमा देंगे।

अनुवादः– "और कयामत के दिन हम इंसाफ की तराजू कायम करेंगे"।

(अल–अंबियाः 47)

उस दिन जर्रा भी ना इनसाफी न होगी, और जो होगा वो ठीक ठीक सामने आ जाएगा, इरशाद होता है–

अनुवादः– "और वजन उस दिन ठीक ठीक होगा फिर जिनके तराजू वजनी रहे तो वही लोग कामयाब हुए, और जिनके तराजू हलके रहे तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपना नुकसान किया इसलिए कि वो हमारी निशानियों के साथ इंसाफ न करते थे"।

(अल–आरफः 8–9)

अनुवादः– "जिसकी तराजू भारी रही, तो वो मन पसंद जिंदगी में होगा, और जिसकी तराजू हल्की रही तो उसका ठिकाना एक गहरा गड़ढ़ा है, और आपको पता भी है कि वो गहरा गड़ढ़ा क्या है"।

(अल–कारिअहः 6–9)

तराजू का नाम आते ही डंडी काटना और न जाने क्या क्या दिमाग में आता है, लेकिन अब तो उसका समझना किसी हद तक और भी आसान हो गया, न जाने नापने और तौलने वाली कैसी कैसी संवेदनशील चीजें इजाद हो गईं जिनमें अक्षरों को भी तौला जा सकता है और गर्मी सर्दी का भी अनुमान आसानी से लगा लिया जाता है, यहाँ तक कि इंसानी मिजाज को भी नाप लिया जाता है, अल्लाह तआला हर चीज का रचयिता और मालिक है, उसके इंसाफ़ की तराजू कैसी होगी उसकी वास्तविकता को कौन समझ सकता है, मगर ये बात तय है कि उसके जरिये से इंसान के वो सारे आमाल (क्रम) जिनका संबंध बाहरी अंगों से हो या आंतरिक हालात और भावनावों से, सब ही उस तराजू में तुल जाएंगी, और दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा, अब जन्नत वालों केलिए जन्नत का और दोजख वालों के लिए दोज़ख़ का फैसला कर दिया जाएगा।

❖❖❖

"मुसलसल नूर बरसाता हुआ माहे सियाम आया"

—मौलाना सै0मु0 सानी हसनी रह0

ज़हे क़िस्मत मुसलमानों! कि फिर माहे सियाम आया।
गुनहगारों के हक़ में बन के रहमत का पयाम आया।।

उधर से इक हवा—ए—रहमते परवरदिगार आई।
इधर अबरे करम छाता बरसता सुब्हो शाम आया।।

चले पैमाने ले ले कर मये इरफाँ के मतवाले।
निगह ड़ाली जो साक़ी ने तो फिर गर्दिश में जाम आया।।

न पूछो आज कितना है उमूमी फैज साक़ी का
गया जो तिशना लब दर पर तो वह फिर शाद काम आया।।

जो आया दौरे जामे मारफत तो तिशना कामों के।
लबों पर मरहबा अहलन व सहलन का कलाम आया।।

नज़र आया जिसे भी चाँद तो फरते मुहब्बत से।
मुबारक बाद देने अपने घर वह तेजगाम आया।।

चली बादे बहारी, हो गये अब्वाबे जन्नत वा।
जहन्नम के हुए दर बंद, शैताँ ज़ेरे दाम आया ।।

ज़मीं से आसमानों तक फ़ज़ा कितनी है नूर अफज़ा।
कि जैसे चौदहवीं की रात में माहे तमाम आया।।

हुआ नाज़िल कलामुल्लाह इसी माहे मुबारक में।
इसी माहे मुक़द्दस में ख़ुदावंदी निजाम आया।।

फिदा जिस पर हज़ारों माह, सदहा साल, लाखों दिन।
वही माहे मुबारक क़ाबिले सद एहतिराम आया।।

हज़ारों बरकतें ले कर हज़ारों रहमतें ले कर।
मुसलसल नूर बरसाता हुआ माहे सियाम आया।।

करे जितना भी नाज़ो फख्र इस पर मिल्लते बैजा।
इसी के वास्ते यह तुहफ—ए—ख़ैरुल अनाम आया।।

तहाएफ भेजिए हज़रत मुहम्मद को सलामों के।
खुशा लब पर हुजूरे सरवरे आलम का नाम आया।।

❖❖❖

रमज़ानुल मुबारक का पैग़ाम

हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

रमजानुल मुबारक का महीना ख़ैर व बरकत का महीना है। ईमान व इबादत का महीना हैं। मुसलमान को मुसलमान बनकर और अपने आमाल को खुदा की खुशनूदी के मुताबिक ढालने की कोशिश का महीना है। दौलतमन्द को अपनी दौलतमन्दी के ज़रिये खुदा को राज़ी व खुश करने का और गरीब को अपनी गरीबी के बावजूद नेक अमल करने का महीना है। यह महीना आता है तो फज़ा को पुरनूर बना देता है। अहले ईमान में मसर्रत की लहर दौड़ा देता है।

रमज़ान का रोजा दर हकीकत विभिन्न क़िस्म के आमाल का मजमूआ है। इस में मुसलमानों को अपने परवरदिगार की रज़ा की तलब में अपने नफ़्स को मारना पड़ता है, इसमें आखिरत के अज्र के लिए अपने माल को खर्च करने का, अपने परवरदिगार की याद दिल में जगाने के लिए नमाज़ व तिलावत का खास मौका मिलता है। अपनी जबान को खूबी और नेकी का पाबन्द बनाने का माहौल मिलता है। अपने वक्त को सुधारने और पाकीज़ा काम के साथ वाबस्ता करने का मौक़ा मिलता है और नेक अमल की तौफीक़ होती है।

रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह तआला के हुक्म से, शयातीन क़ैद कर दिये जाते हैं। शयातीन जिन का काम बस यह है कि वह इन्सानों का अच्छे कामों से मोह भंग करें और बुरे कामों के सब्ज़ बाग दिखाएं। इस माह में वह इस जालिमाना और गन्दे काम से रोक दिये जाते हैं, इसके नतीजों में नेकी करने वालों को नेकी करने में आसानी होती है और बुराई इख़्तियार करने वालों को बुराई की तरफ माइल होने का उतना इम्कान नहीं रहता, जितना गैर रमज़ान में होता है।

फिर हर इन्सान नफ़्स व नफ़्सानियत से भी मुरक्कब है। इन्सान का नफ़्स लज़्जत और राहत तलब होता है। उसमें लालच का माद्दा भी होता है और खुद गर्जी का जज़्बा भी होता है। जिन्दगी की बहुत सी बुराइयों को इख़्तियार करने में इन्सान का नफ़्स मुहर्रिक बनता है, इसमें शैतान की कोशिश का ही दख़ल नहीं। शैतान इसमें सिर्फ बढ़ावा देता है और ताकत पहुंचाता है। और मज़ीद बड़ी बुराइयों की तरफ माइल करता है और उसमें मदद करता है। रमजान में जो बुराइयां की जाती हैं वह इसलिए कम होती हैं कि वह सिर्फ नफ़्स के असर से होती हैं उनको शैतान का सहारा नहीं मिलता।

लेकिन इन्सानी नफ़्स बाज़ इन्सानों में और बाज क़ौमों पर इतना हावी हो जाता है कि उसको अपने बुरे कामों के लिए शैतान के सहारे की कोई खास ज़रूरत नहीं होती। यह नफ़्स रमजान के महीने में भी अपना काम करता रहता है, लेकिन अल्लाह तआला ने रोजे में यह भी असर रखा है कि वह नफ़्स को कमज़ोर कर दे और उसको उसके बुरे असरात से रोके और उसके असर को कम कर दे। क्योंकि दरहकीकत रोज़ा नफ़्स के खराब असर को तोड़ने का अमल है। इन्सान का पेट जब खाली होता है और प्यास का

एहसास होता है तो बुराइयों की तरफ उसका रुझान कमज़ोर पड़ जाता है। इन्सान में भरे पेट के साथ ग़लत कामों की तरफ जो मैलान होता है वह खाली पेट में नहीं होता। इसीलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे शख्स को जिसको नफ़्सानी ख्वाहिश ज़्यादा होती हो लेकिन उसके पास शादी करने की माली ताकत न हो, रोजे रखने की हिदायत फरमाई, ताकि वह अपनी ख्वाहिश पर गालिब आ सके और उसकी ख़ातिर गलत काम में मुब्तला न हो जाए। रोज़े की ताक़त अल्लाह तआला ने ऐसी बनाई है कि वह नेकियों की राह बनाता है और गुनाहों की राह रोकता है। लेकिन रोज़े के असरात और उसकी नेक फज़ा उसी वक़्त अपना अमल करती है जब रोज़े को उसके आदाब और उसकी मुकर्रर एहतियातों के साथ रखा जाए और वह खुदा के लिए हो। अपने किसी माद्दी या खुद ग़रजाना मकसद के लिए न हो। रोज़े में जो बातें ममनूअ करार दी गई हैं उससे पूरा परहेज हो और रोज़े की फज़ा को कायम करने के लिए जो आमाल बताए गये हैं वह इख़्तियार किये जाएं।

रोज़ा यूं ज़ाहिर में फज्र के वक्त से गुरूबे आफताब के वक्त तक खाने, पीने और सहवास से बचने का नाम है। लेकिन इसके साथ–साथ झूठ, गीबत और ज़बान व हाथ के दूसरे गुनाहों से पूरे परहेज का नाम भी है। चुनांचे हदीस शरीफ़ में आता है कि किसी ने रोज़ा रखा और खाने से परहेज़ किया लेकिन गीबत, झूठ जैसे कामों से परहेज़ नहीं किया तो उसको क्या ज़रूरत थी कि वह भूखा–प्यासा रहे। इसका मतलब यह हुआ कि ऐसे शख्स का रोज़ा बेकार गया। इसलिए बाज फुक़हा के यहाँ झूठ बोलने और गीबत करने से भी रोज़ा टूट जाता है। लेकिन सब इमामों के नज़दीक ऐसा नहीं है। वह कहते हैं कि रोज़े का ज़ाहिरी अमल तो अंजाम पा जाता है क्योंकि अस्ल शर्त पूरी हो गई लेकिन गुनाहों के सबब उसका सवाब जाता रहता है, क्योंकि उसके आदाब का ख़्याल नहीं किया गया और गुनाह कर डाला। रोज़े को अल्लाह तआला ने नेकियों का मौसम बनाया है, इसमें जिस क़द्र नेकी करने की सूरतें बनती हैं, दूसरे इबादती अमल में मुश्किल से बनती हैं। इसमें तो खुद रोज़ा एक बड़ा अमल है, फिर उसमें नमाज़ें हैं, कुर्आन मजीद की तिलावत है, गरीबों की मदद है, और बिला क़ैद और हर वक्त खाने–पीने से रोक है और जुहद की कैफियात अपनाने का मौका है।

फिर बतौरे मज़ीद इसमें नेकी करने का सवाब सत्तर गुना कर दिया जाता है। गैर रमजान में की जाने वाली एक नेकी और रमज़ान में की जाने वाली एक नेकी के सवाब में एक और सत्तर का फर्क़ है।

फिर रमज़ान में रोज़े रखना चूंकि तमाम मुसलमानों पर बैकवक्त जरूरी किया गया है, इसलिए मुसलमानों के मुआशरे में इस पूरी मुद्दत में हर तरफ एक ही फ़जा बन जाती है और वह फज़ा नेकी की, हमदर्दी की, नर्म खूई की, आखिरत तलबी की, एहतियात और इबादत की फज़ा होती है।

इसलिए रमज़ान में उन लोगों को जिनको बीमारी या सफर की वजह से रोज़ा न रखने की इज़ाज़त दी गई है, उनको भी यह मना है कि वह सबके सामने खाएं–पिएं। उनको हुक्म है कि सबसे अलग जगह खाएं–पिएं ताकि रोज़े की फ़ज़ा मुतअस्सिर न हो।

शेष पृष्ठ ....28..पर..

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

हिन्दुओं की विद्याओं में रुचिः—

फिरोज़शाह ने यदि कुछ मन्दिर गिरवाए तो उसकी जीवनी में यह भी मिलता है कि जब 1361 ई0 में वह नगर—लोट पहुंचा तो यहाँ हिन्दुओं की विद्याओं से सम्बन्धित जो किताबें देखीं, उनके बारे में जानकारी प्राप्त करके खुश हुआ। पंडितों को बुला कर उनका अनुवाद करने की फ़रमाइश की। उनमें से एक किताब में दर्शन, नक्षत्र विज्ञान और धार्मिक साहित्य से सम्बन्धित लाभदायक जानकारी थी। फ़िरोज़शाह ने उसका फ़ारसी में अनुवाद कराने का आदेश दिया। उस ज़माने के प्रसिद्ध कवि इज्जुद्दीन खालिद ने इसका अनुवाद किया और नाम दलायल फ़िरोज़शाही रखा। उन्हीं किताबों में खगोल विज्ञान पर सारादिली और नक्षत्र विज्ञान पर उवैस तन्ज़ के भी फ़ारसी में अनुवाद किए गए, फ़िरोज़शाही की फरमाइश से नक्षत्र विज्ञान पर संस्कृत की एक महत्वपूर्ण किताब 'परहम समस्था' जो बराह मेहर की लिखी हुई थीं, का फ़ारसी अनुवाद तारीख़ फ़िरोज़शाही के लेखक शम्स सेराज ने किया। प्रोफ़ेसर के0एम0 पान्निकर का कथन है कि फ़िरोज़शाह पर धार्मिक पक्षपात का आरोप लगाया जाता है। लेकिन वह एक हिन्दू कवि रतन शेख़र का बहुत सम्मान करता रहा। उसका सम्मान हिन्दू राजाओं के लिए भी जारी रहा, प्रत्येक अवसर पर उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान करता रहा। मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी हिन्दुओं को अपमानित करने पर खुश होते लेकिन उनका अपना कथन है कि जब फ़िरोज़शाह अपने शाही दौरे पर गोरखपुर और कहरोसा पहुंचा तो वहां के राय लोग अपने प्रमुख सरदारों और राजाओं के साथ उसके दरबार में आए, फ़िरोज़शाह ने उनको राजकीय उपकारों से उपकृत किया, बरनी के शब्द ये हैं।

''गोरखपुर के राय ने हाथी और अन्य उपहार प्रस्तुत किए और शाही इनाम प्राप्त किया जिसमें हीरे, जवाहिरात, छत्र और अच्छे नस्ल के घोड़े सम्मिलित थे और उनके क्षेत्र के अन्य सरदारों को भी खिलअत दी गई। कहरूसा के राय ने भी अपनी क्षमता के अनुसार उपहार दिया और अपने क्षेत्र के सरदारों के साथ सम्मान और इनाम प्राप्त किया, और सबने दरबार का आज्ञापालन स्वीकार किया।

जिज़ियाः—

फ़िरोज़शाह ने हिन्दुओं पर जिज़िया लगाया। उसको ग़ैर इस्लामी क़ानून तो नहीं कहा जा सकता है, लेकिन हिन्दुओं की दृष्टि में यह रूढ़िवाद समझा जाता है और निन्दनीय भी। इसका बड़ा कारण यह है कि मुसलमानों के समूचे शासनकाल में जिज़िया की हैसियत और वास्तविकता को अच्छी तरह स्पष्ट नहीं किया गया। मौलाना शिब्ली ने 20वीं सदी में जिज़िया की वास्तविकता को जिस तरह समझाया है, यदि उस ज़माने के उलमा भी समझाते रहते तो यह टैक्स भड़काने वाला नहीं समझा जाता।

मौलाना शिब्ली ने क़ाज़ी

अबू यूसुफ़ की किताबुल ख़िराज और फुतूहुल बुल्दान के हवाले से जिज़िया की व्याख्या इस तरह की है कि इस्लाम के संस्थापक अर्थात पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 ने जिन क़ौमों पर जिज़िया लगाया उनको लिखित रूप से निम्नलिखित अधिकार दिए:

1. कोई दुश्मन उनपर हमला करेगा तो उनकी ओर से बचाव किया जाएगा।
2. उनको उनके धर्म से दूर नहीं किया जाएगा।
3. जिज़िया उनसे जाकर लिया जाएगा, इसके लिए वसूल करने वाले के पास स्वयं जाना नहीं पड़ेगा।
4. उनकी जान की रक्षा की जाएगी।
5. उनकी सम्पत्ति सुरक्षित रहेगी।
6. उनके व्यापारिक कारवाँ सुरक्षित रहेंगे।
7. उनकी ज़मीन सुरक्षित रहेगी।
8. सभी वस्तुएं जो उनके पास हैं, बहाल रहेंगी।
9. पादरी, राहिब, गिरजों के पुजारी अपने पदों से नहीं हटाए जाएंगे।
10. सलीबों (क्रॉस) और मूर्तियों को हानि नहीं पहुंचायी जाएगी।
11. उनसे उश्र (10वाँ) नहीं लिया जाएगा।
12. उनके क्षेत्र में सेना नहीं भेजी जाएगी।
13. पहले से उनका जो धर्म और विश्वास था, वह बदलवाया नहीं जाएगा।
14. उनका कोई अधिकार जो उनको पहले से प्राप्त था, समाप्त नहीं किया जाएगा। जो लोग इस समय मौजूद नहीं हैं, इस आदेश में वह भी सम्मलित होंगे।

मौलाना शिब्ली रह0 ने यह भी लिखा कि इन क़ानूनों पर ख़िलाफत–ए–राशिदा (सन्मार्ग पर जारी ख़िलाफत) के ज़माने में लगातार अमल होता रहा। हज़रत अली रज़ि0 फरमाया करते थे कि जो लोग ज़िम्मी हो चुके (अर्थात जिन लोगों ने जिज़िया देना स्वीकार कर लिया) उनका खून हमारा खून है और उनका खून बहा हमारा खून बहा है। मौलाना शिब्ली ने इसी सिलसिले में यह भी लिखा है कि इस्लाम ने जो व्यवस्था स्थापित की उसके अनुसार हर मुसलमान सेवा के लिए विवश किया जा सकता है, लेकिन ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी शासन के अन्तर्गत होते हैं उनकी सुरक्षा व्यवस्था मुसलमानों को करनी होती है। उनको सैनिक सेवा पर विवश करने का इस्लाम को कोई अधिकार नहीं हैं न वह लोग ऐसी ख़तरे भरी सेवाओं के लिए राज़ी हो सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि वह अपनी रक्षा के लिए कोई मुआवज़ा दें, इसी मुआवजा का नाम जिज़िया रखा। यदि किसी अवसर पर दूसरी क़ौमें सेना में सम्मिलित होना या सम्मिलित होने के लिए आमादा होना गवारा कर लें तो वह जिज़िया से बरी कर दी जायेंगी। स्वयं पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 ने ईला के गवर्नर को जिज़िया का जो फ़रमान लिखा, उसमें यह शब्द दर्ज कराए। ''इन लोगों की रक्षा की जाए और दुश्मनों से बचाया जाये''। जिज़िया की इस हैसियत को समझने के बाद यह कर निन्दनीय नहीं कहा जा सकता।

यह तो मानवाधिकारों की ज़मानत बन जाता है। लेकिन अफ़सोस है कि इस स्पष्टीकरण के साथ जिज़िया की वास्तविकता को सामान्य रूप से समझने का प्रयास नहीं किया गया। इसीलिए यह संदेह की दृष्टि से देखा जाता रहा। इस सम्बन्ध में वर्तमान काल के एक इतिहासकार ईश्वर टोपा का निम्नलिखित विश्लेषण पूर्णतः उपयुक्त है जिससे सही विश्वास रखने वाला कोई मुसलमान भी मतभेद नहीं कर सकता है।

''जिज़िया उस कर को कहते थे जो इस्लामी हुकूमत अपनी ग़ैर मुस्लिम प्रजा से उस सेवा के मुआवज़े में वसूल करती है कि वह हिन्दुओं के राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकारों की रक्षा करती रहे। जिज़िया लेने के बाद राज्य ज़िम्मेदार होता है कि कोई ज़िम्मी किसी हैसियत से भी न सताया जाए और वह पूरी तरह सुरक्षित जीवन व्यतीत करे। उसको सरकारी नौकरी प्राप्त करने का पूरा अधिकार प्राप्त हो और वह धार्मिक और सामाजिक रीतियों को अदा करने में पूर्णतः स्वतन्त्रत हो। जिज़िया लेने के बाद इस्लामी राज्य हर तरह से ज़िम्मियों के जान–माल की निगरानी करता था और इस्लामी सेना युद्ध के अवसर पर और दूसरे नाजुक अवसरों में उनकी पूरी तरह रक्षा करती थी और ऐसा करना उसके धार्मिक कर्तव्यों में सम्मिलित था। जिम्मियों से जो रूपया वसूल किया जाता, वह मानो उस खून की कीमत होती जो मुसलमान ज़िम्मियों की रक्षा में बहाते थे। यदि कोई इस्लामी राज्य ज़िम्मियों की रक्षा करने में असमर्थ हो जाता तो उसको जिज़िया वसूल करने का भी अधिकार न रह जाता। इस्लामी इतिहास की किताबों में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं कि जब कोई राज्य ज़िम्मियों की निगरानी करने में असमर्थ हो गया तो जिज़िया की रक़म उनको वापस कर दी गयी। ज़िम्मियों को अपनी इच्छा से सेना में प्रवेश होने का पूरा अधिकार प्राप्त था लेकिन जिज़िया अदा करने के बाद वह ज़बरदस्ती भर्ती से आज़ाद कर दिए जाते थे। लेकिन यदि अपनी मर्जी से वह सेना में भर्ती हो जाते तो जिज़िया माफ़ कर दिया जाता। जिज़िया ज़िम्मियों के वयस्क मर्दों से लिया जाता जो शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से सक्षम होते और जिज़िया की रक़म अदा करने की क्षमता भी रखते। जिज़िया अदा करने और लेने में आपसी समझौता भी हो जाता। फिर जिज़िया सम्पन्न वर्ग से 48 दिरहम, मध्यम वर्ग से 24 दिरहम, और ग़रीबों से 12 दिरहम लिया जाता था। बूढ़े, औरतें और मानसिक रूप से विक्षिप्त, ग़रीब, अंधे, अपंग और राहिब जिज़िया से मुक्त थे। हाँ, दौलतमंद अंधों, अपंगों और राहिबों से लिया जाता था। जिज़िया नक़द और गल्ला दोनों में अदा किया जा सकता था। मुसलमान फ़क़ीह राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार जिज़िया के अर्थ और परिभाषा परिवर्तन करते रहे और वह जिज़िया के मूल उद्देश्य को भूल कर उसको मुस्लिम राज्य के राजनीतिक हित के लिए इस्तेमाल करते रहते ताकि

ग़ैर मुस्लिम प्रजा पूर्णतः अधिकार और नियन्त्रण में रहे। शोधकर्ताओं का विचार है कि कुछ फ़क़ीहों ने जिज़िया का ग़लत प्रयोग किया। क़ासिम अलगादी ने कुरआन की आयत की आश्चर्यजनक व्याख्या करके बेकार के तर्कों से काम लिया है और कुरआन की उन आयतों के पक्षपातपूर्ण और हिंसात्मक अर्थ बताए हैं। क़ासिमुल ग़ाजी का विचार है कि कुरआन की इन आयतों का कदापि यह उद्देश्य नहीं कि ज़िम्मियों को राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और नैतिक हैसियत से अधीन बना कर उनको गिरी हालत में रखा जाए इस्लाम के किसी क़ानून ने इस हिंसा की अनुमति नहीं दी है। यदि किसी ने यह हिंसा की है तो इसकी ज़िम्मेदारी फ़क़ीहों पर है। हिन्दुस्तान के मध्यकाल में सरकारी और सैनिक सेवाओं में इसी तरह सम्मिलित हो सकते थे जिस तरह खुलफा–ए–राशिदीन के ज़माने में सम्मिलित हुए थे। फ़िरोज़शाह से पहले तो सम्भवतः हिन्दुओं पर जिज़िया लगाया भी नहीं गया। उस ज़माने की इतिहास की किताबों में जिज़िया का शब्द बहुत कम प्रयोग हुआ है। यदि यह कहीं लगाया भी गया तो इस्लामी क़ानून के अनुसार इस पर अमल नहीं हुआ क्योंकि शुद्ध रूप से इस्लामी व्यवस्था का राज्य ही स्थापित नहीं हुआ।

.....जारी.....

❖❖❖

पृष्ठ....10...का शेष

हमारा नाम लिखा जाएगा, दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़त और इनआम से सरफ़राज़ होंगे, इस समय मुस्लिम उम्मत मसाएब और आलाम से घिरी हुई है, इसके बावजूद हमें इसका एहसास नहीं, आज हमारा दीन सिर्फ़ ज़बानों तक है हमारी ज़िन्दगियों में दीन नहीं है हमारे दिलों में दीन नहीं, कुरआन मुतालबा करता हैः– ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दमों की ताबेदारी न करो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है''

(सूरः बक़रा आयत नं0 208)

इस्लाम का उद्देश्य और अर्थ यही है कि जीवन के हर विभाग में पूर्ण रूप से अल्लाह की ताबेदारी की जाए।

इस्लामी इबादात में आपको अल्लाह की ताबेदारी की स्प्रिरिट नज़र आएगी, नमाज़ रोज़ा, ज़कात, हज सबका हाल यही है, अल्लाह को राज़ी करने के लिए समय की पाबन्दी के साथ अदा किये जाएंगे, अपनी इच्छा और ख़्वाहिश का कोई दख़ल नहीं, हमारा पक्का इरादा और फैसला हो कि जिस तरह हमारे 11 महीने ग़फ़लत और लापरवाही में गुज़रे हैं रमज़ान का महीना ग़फ़लत में नहीं गुज़रेगा, अगर आपने ऐसा कर लिया तो अल्लाह का फ़ैसला आपके हक़ में होगा। अल्लाह की मदद हासिल करने के लिए मुहम्मद सल्ल0 के आदेशों का पालन करना ज़रूरी है।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं।
ये जहाँ चीज़ है क्या लौहो क़लम तेरे हैं।।

❖❖❖

कुरआन की तिलावत के चार फ़ायदे

- कुरआन मजीद की तिलावत से अल्लाह की मुहब्बत में बढ़ोत्तरी होती है।
- हर हर शब्द पर दस नेकियाँ मिलती हैं।
- दिल का ज़ंग साफ़ होता है।
- क़यामत के दिन कुरआन गवाही देगा।

कुरआन का महीना, रमज़ान

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0

रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुर्आन उतारा गया, जो लोगों के लिए हिदायत है उसमें रास्ता पाने (सत्य और असत्य) में और अन्तर करने की खुली निशानियाँ हैं। अतः तुममें जो कोई इस महीने को पाए उसे चाहिए कि वह उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफर में हो तो दूसरे दिनों से (छूटे हुए रोज़ों की) गिन्ती पूरी करले। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है वह तुम्हारे साथ सख्ती और कठिनाई नहीं चाहता (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है उस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो ताकि तुम कृतज्ञ (शुक्र गुजार) बनो।

(अल बक़रहः 185)

निः सन्देह हमने उसे एक बरकत वाली रात में उतारा है।

(अददुखानः 2)

बेशक हमने इसे (अर्थात कुर्आन को) क़द्र की रात में उतारा है। (अल क़द्रः1)

रमज़ान के महीने में एक रात है जिसको लैलतुल क़द्र (क़द्र की रात) कहते हैं, इसी को लैलतुल मुबारकः बरकत वाली रात भी कहा गया है। यह रात बाज़ रिवायात के अनुसार रमज़ान के अन्तिम दशक में आती है, अपितु बाज़ रिवायात से ज्ञात होता है कि यह रमज़ान के अन्तिम दशक की ताक़ (विषम) रातों में से किसी रात में आती है इस रात के विषय में सूर–ए–क़द्र ही में बताया गया है कि यह हज़ार महीनों से बेहतर है, अर्थात इस रात में जो इबादत नमाज़ के रूप में या तिलावत (कुर्आन पाठ) के रूप में या दुआ व दुरूद के रूप में की जाएगी उसका सवाब (प्रतिफल) हज़ार महीनों की इबादत से बढ़ कर मिलेगा। इस उम्मत पर यह अल्लाह का बड़ा करम (कृपा) है, फिर इस रात को नियुक्त करके नहीं बताया गया है अन्तिम दशक में गुप्त रखा गया ताकि उम्मत के लोग उसकी खोज में कई रातों में जाग कर अपने रब की उपासना करें इस प्रकार उस छुपी बरकत वाली रात में भी उपासना मिल जाएगी और इंशाअल्लाह उसका खूब सवाब मिलेगा, और दूसरी रातों में इबादत करने का सवाब भी मिल जाएगा वह भी सत्तर गुना बढ़ा कर मिलेगा, जैसा कि बाज़ रिवायतों में इसका संकेत मिलता है।

यह पवित्र कुर्आन लौहे महफ़ूज़ में सुरक्षित है सूर–ए–वाकिआ आयत 77, 78 में बताया गया है।

निश्चय ही यह प्रतिष्ठित कुर्आन है, जो एक सुरक्षित किताब में (अर्थात लौहे महफूज़ में) अंकित है, जिसे केवल पाक साफ व्यक्ति ही हाथ लगाते हैं।

उस लौहे महफूज़ से अल्लाह तआला ने यह कुर्आन रमज़ान की मुबारक रात अर्थात क़द्र की रात (लैलतुल क़द्र) में इस संसार के ऊपर जो आकाश (आसमाने दुन्या) है उस पर उतारा, फिर वहां से आवश्यकतानुसार जिब्रील फ़रिश्ता द्वारा अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा जाता रहा और 23 वर्षों में यह पूरा उतार दिया गया।

रिवायत से सिद्ध है कि हमारे प्रिय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान के

महीने में हज़रत जिब्रील से कुर्आन का दौर किया करते थे अर्थात परस्पर सुनते सुनाते थे, और तमाम सहाबा रमज़ान की रातों में नमाज़ में कुर्आन पढ़ा करते थे। यह भी सिद्ध है कि प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक रमज़ान में अपने सहाबा के साथ जमाअत से नमाज़ पढ़ी जिसमें आप ने कुर्आन मजीद काफ़ी मात्रा में सुनाया, इसी नमाज़ का नाम तरावीह़ की नमाज़ है, तरावीह की यह नमाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन रातों में पढ़ाई। हर रात सहाबा की तादाद बढ़ती गई चौथी रात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह विशेष नमाज़ जमाअ़त से नहीं पढ़ाई और पूछने पर बताया कि मुझे तुम लोगों का इस नमाज़ से शौक़ देख कर डर लगा कि कहीं अल्लाह तआ़ला की ओर से तुम पर फ़र्ज़ न हो जाए फिर अगर तुम इसमें कोताही करो तो बड़े गुनाह में फंस जाओ। (यह रिवायत के शब्द नहीं हैं अपितु उसका सारांश है)

उसके पश्चात सहा–बए–किराम यह नमाज़ अपने अपने तौर पर पढ़ने लगे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहांत के पश्चात ख़लीफ़ा अबू बक्र रज़ि0 के समय में भी यही हाल रहा, हज़रत उमर रज़ि0 का काल आया तो आप ने निर्णय लिया कि अब यह नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाए, वह प्रतिष्ठित सहाबी हैं उन्होंने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इच्छा को भांप लिया था कि वह यही चाहते थे कि बाद में यह नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाय, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का काल नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काल से मिला हुआ था अतः यदि वह यह नमाज़ जमाअ़त से जारी करते तब भी शंका होती कि कहीं यह वाजिब तो नहीं है, परन्तु हज़रत उमर रज़ि0 के काल से इस शंका का भय न रहा अतः हज़रत उमर रज़ि0 ने इसे जमाअ़त से पढ़ने का आदेश दिया।

तरावीह की रकअतों में मतभेद हुआ है कुछ विद्वान मानते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आठ रकअतें पढ़ाईं थीं और हज़रत उमर रज़ि0 ने भी आठ ही रकअतें जमाअत से पढ़वाईं, परन्तु बहुत से विद्वानों का मानना है कि बाज़ रिवायतों और बाज़ बड़े सहाबा के अमल से सिद्ध है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बीस रकअतें पढ़ाईं थी और हज़रत उमर रज़ि0 ने भी बीस रकअतें पढ़ने का आदेश दिया। हरमैन शरीफ़ैन अर्थात हरमे मक्का मुकर्रमा और मस्जिदे नबवी में अब तक बीस रकअतें तरावीह पढ़ी जाती हैं। दुनिया भर के हनफी मुसलमान भी बीस रकअ़तें तरावीह पढ़ते हैं जब कि अहले हदीस हज़रात आठ रकअत तरावीह़ पढ़ते हैं।

उक्त सारी बातों से यह सिद्ध करना है कि रमज़ान कुर्आन का महीना है, इस मास में रोज़ाना अधिक से अधिक कुर्आन पढ़ने का एहतिमाम (प्रबन्ध) करें और तरावीह अवश्य पढ़ें, तरावीह की नमाज़ फर्ज़ वाजिब तो नहीं है परन्तु सुन्नते मुअक्किदा है जिसे अकारण छोड़ने पर पकड़ होगी। फिर जिस मस्जिद में पूरा कुर्आन सुनाने का प्रबन्ध है अगर आप पाबन्दी से वहीं तरावीह पढ़ेंगे तो नमाज़ में कुर्आन ख़त्म करने का सवाब पाएंगे।

हमारे बहुत से भाई कुर्आने मजीद नहीं पढ़े हैं उनको चाहिए कि घर में या मस्जिद में कोई कुर्आन पढ़ रहा हो तो उससे निवेदन करें कि कुछ

कुर्आन वह उसे सुना दे, फिर आप नमाज़ पढ़ने के लिए कुछ सूरतें तो याद ही किये हुए हैं आप उन सूरतों को नमाज़ों में, तथा नमाजों के पश्चात, और चलते फिरते ख़ूब पढ़ें कि वह कुर्आन ही तो है।

निःसंदेह रमज़ान कुर्आन का महीना है अतः इस लेख में उक्त बातें प्रस्तुत की गईं, अब उससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाना है कि जिस बुद्धि वाले व्यस्क मुसलमान को यह महीना मिले वह पूरे महीने रोज़े अवश्य रखे कि इस माह में रोजे रखना फर्ज है, हमारे बहुत से भाई सुस्ती काहिली से और शैतान के चरके में आकर रोज़े छोड़ बैंठते हैं वह महापाप करते हैं, दीनदार भाइयों को चाहिए कि ऐसे भाइयों को हिकमत से टोक कर रोज़े रखने पर तैयार करें, और जो बीमार हों और रोज़े न रख सकें या सफर पर होने के कारण रोज़े रखने में असुविधा हो और वह रोज़े न रख सकें वह दूसरे दिनों में छूटे रोज़े पूरे कर लें।

आपके कुछ भाई ऐसे भी मिलेंगे जिनके खाने पीने का ठीक से प्रबन्ध न होगा आप चुपके से उनकी मदद करें हो सके तो आप उनकी सेहरी का प्रबन्ध कर दें या शाम को रोज़ा खुलवा दें और शाम का खाना भी खिला दें।

अगर आप साहिबे निसाब हैं अर्थात 612 ग्राम चाँदी या उसे खरीदने भर के रूपयों के मालिक हैं तो आप पर ज़कात फर्ज है अतः आपके जिन रूपयों या गहनों (जेवरों) पर साल बीत गया है उसका हिसाब कर के उसका चालीसवां भाग (ढाई प्रतिशत) निकाल कर ग़रीबों की मदद पर या दीनी मदारिस पर ख़र्च कर सकते हैं, इसमें कोताही न करें।

कुछ भाई रोजे की भूख प्यास में बड़े गुस्से का इज़हार करते हैं और अपने मातहतों पर गुस्सा गर्मी दिखाते हैं उनको ऐसा न करना चाहिए तथा लड़ाई–झगड़े गाली गलौज से बहुत दूर रहना चाहिए। अल्लाह तौफीक़ दे हर बस्ती में किसी एक रोज़ेदार का एतिकाफ करना भी अहम सुन्नत है, जिसे अल्लाह तौफीक दे यह सुन्नत अदा करे, इसके लिए 20 रमज़ान की मग़रिब की नमाज़, एतिकाफ़ करने वाली मस्जिद में पढ़ना चाहिए और फिर एतिकाफ की नीयत से ईद का चाँद दिखने तक मस्जिद ही में रहना चाहिए और ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त इबादत, तिलावत, दुरूद में लगाना चाहिए नींद आये तो वहीं सोना है, पाख़ाना पेशाब या फर्ज़ गुस्ल के लिए बाहर निकल सकते हैं, वुजू अगर मस्जिद में मुशकिल हो तो मस्जिद से मिली हुई जगह पर वुजू करलें, अगर गांव या मुहल्ले की मस्जिद में कोई एतिकाफ न करेगा तो पूरी बस्ती और मुहल्ले वालों पर सुन्नत छोड़ने पर पकड़ होगी लेकिन अगर एक आदमी भी एतिकाफ कर लेगा तो सब की तरफ से सुन्नत अदा हो जाएगी।

ईद के रोज हर साहिबे निसाब पर सद–कए–फित्र वाजिब होता है जिसे फित्रा भी कहते हैं, यह सदका साहिबे निसाब अपनी तरफ से अदा करे और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ से भी अदा करे बीबी या बालिग़ औलाद अपना फ़ित्रा खुद अदा करें, अगर घर मालिक, बालिग़ औलाद और बीवी की तरफ से सदक़ा देदे तो अदा हो जाएगा।

सद–कए–फित्र एक आदमी की तरफ से आधा साअ़ गेहूँ यानी एक किलो 600 ग्राम गेहूँ या उसकी कीमत आदा करें, आधा साअ़ की तौल में मतभेद हुआ है।

शेष पृष्ठ ...30..पर..

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः रमज़ान के रोज़े किन लोगों पर फ़र्ज़ हैं?

उत्तरः रमज़ान के रोज़े हर आ़क़िल (बुद्धिमान) बालिग़ (व्यस्क) तन्दुरुस्त (स्वस्थ) मुक़ीम मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ हैं।

प्रश्नः क्या नाबालिग़ बच्चों पर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ नहीं हैं?

उत्तरः हाँ नाबालिग़ बच्चों और मज़नून पर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ नहीं हैं। हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः तीन क़िस्म के आदमी मरफ़ूउ़लक़लम (वह जिनके कर्म नहीं लिखे जाते) हैं एक मजनून यहां तक कि उस का जुनून (पागल पन) दूर हो जाए, दूसरा सोने वाला यहां तक कि वह जाग जाए, तीसरा बच्चा यहां तक कि वह बालिग़ हो जाए।

(मुस्नदे अह़मद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, फ़िक्हुस्सुन्नः)

नाबालिग़ बच्चों पर रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ नहीं लेकिन अन्दाज़ा लगाया जाए जो बच्चे रोज़े रख सकते हैं उनसे रोज़े रखवाएं सवाब मिलेगा और आदत बनेगी जब बालिग़ हो जाएंगे तो रोज़ा छोड़ने के गुनाह में मुब्तला न होंगे।

रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ होने से पहले जब आ़शूरा के रोज़े की बड़ी अहमियत थी तो सहाब—ए—किराम नाबालिग़ बच्चों से भी रोज़ा रखवाते थे। इस तरह बच्चों से रोज़े रखवाने का सुबूत मौजूद है।

प्रश्नः बूढ़ों के लिए रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः ऐसे बूढ़े जो रोज़े रखने की ताक़त न रखते हों रोज़े न रखें जैसा कि फ़िक़्ह की किताबों में लिखा है। (बिदायतुल मुजतहिद 1/202) मगर फ़िद्या अदा करें।

प्रश्नः किन चीज़ों से रोज़ा मक्रूह नहीं होता?

उत्तरः 1. सुर्मा लगाना।
2. बदन पर तेल मलना या सर में तेल डालना।
3. ठन्डक के लिए गुस्ल करना।
4. मिस्वाक करना, चाहे ताज़ी जड़ या तर शाख की हो।
5. खुश्बू लगाना या सूंघना।
6. भूले से कुछ खा पी लेना।
7. खुद ब खुद कै हो जाना ।
8. अपना थूक अन्दर ही अन्दर निगलना।
9. बिला कस्द मक्खी या धुएं का हलक़ से उतर जाना।

प्रश्नः क्या रमज़ान में सालाना इग्ज़ाम आ जाने पर रोज़ा छोड़ सकते हैं?

उत्तरः रोज़ा हर आक़िल बालिग़ मर्द व औरत पर फर्ज है सिर्फ इग्ज़ाम की वजह से रोज़ा छोड़ने या रोज़ा तोड़ने की शरीयत में गुंजाइश नहीं है, रोज़े के साथ ही इग्ज़ाम दे, खुदा मदद फरमायेगा।

(फतावा रहीमिया 2/34)

प्रश्नः जो व्यक्ति रमजान में रोजा रखता हो, और नमाज़ न पढ़ता हो, उसका रोज़ा होता है या नहीं?

उत्तरः रोज़ा हो जाता है, नमाज़ छोड़ने पर गुनहगार होगा, नमाज़ की कज़ा उसके जिम्मे फर्ज है, नमाज़ और रोज़ा दोनों अलग अलग इबादतें हैं एक दूसरे पर निर्भर नहीं है।

(फतावा दारूल उलूम 6/499)

प्रश्नः बाज़ लोग हार्डवर्किंग (सख़्त मेहनत) का उज़्र पेश

करके रमज़ान के रोज़े नहीं रखते हैं उनके लिए क्या हुक्म है?

उत्तर: हर आ़क़िल बालिग़ मुसलमान पर रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हैं चाहे वह सख़्त मेहनत का काम करता हो या हल्की मेहनत का काम हो, सख़्त मेहनत वाले काम किये बग़ैर खुद को और बाल बच्चों की रोज़ी रोटी न मिल सके, फिर भी एक मुसलमान को चाहिए कि रमज़ान में मुमकिन हो तो सख़्त मेहनत वाले काम न करें लेकिन मजबूरन करना ही पड़े तो रोज़े रखने की हिम्मत करें फिर भी अगर रोज़े छूट जाएं तो उनकी क़ज़ा करे सख़्त मेहनत वाले को रोज़े मुआ़फ़ नहीं हो सकते।

प्रश्न: क्या बीड़ी सिगरेट पीने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर: हाँ बीड़ी सिगरेट पियें या हुक़्क़ा या चिलम, रोज़ा टूट जाएगा, मुँह में खैनी रखने या पान में तम्बाकू खाने से भी रोज़ा टूट जायेगा।

प्रश्न: क्या सादा पान खाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर: हाँ सादा पान खाने से रोज़ा टूट जाता है, सादा पान जिस में कत्था चूना लगा होता है और डली पड़ी होती है उसके खाने से रोज़ा टूट जाता है।

प्रश्न: क्या इन्हेलर खींचने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर: इन्हेलर कई तरह के होते हैं जैसे गैस का इन्हेलर या कैप्सूल का इन्हेलर जो मुँह से खींचे जाते हैं एक नाक का इन्हेलर होता है इन सब से रोज़ा टूट जाता है।

प्रश्न: क्या नाक, कान और आँखों में दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर: नाक और कान में दवा डालने से रोज़ा टूट जाता है लेकिन आँखों में चाहे दवा डालें चाहे सुरमा लगाएं चाहे काजल लगाएं रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्न: क्या इन्जेक्शन लगाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर: इन्जेक्शन लगाने से रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्न: क्या क़ै हो जाने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर: ख़ुद से क़ै हो जाने से रोज़ा नहीं टूटता चाहे थोड़ी हो या ज़ियादा, अलबत्ता क़सदन क़ै करने से अगर मुँह भर के हुई है तो रोज़ा टूट जायेगा ज़रा सी हुई है तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

प्रश्न: कुछ लोग इफ़्तार का वक़्त हो जाने पर भी कुछ रुक कर इफ़्तार करते हैं ऐसा करना कैसा है?

उत्तर: जब यक़ीन हो जाये कि सूरज गुरूब हो चुका है तो फ़ौरन इफ़्तार करना चाहिए देर करना मकरूह है।

प्रश्न: क्या रोज़े की हालत में ग़ीबत करने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तर: ग़ीबत किसी की पीठ पीछे बुराई करने को कहते हैं ये बहुत बड़ा गुनाह है मगर इससे रोज़ा नहीं टूटता अलबत्ता मकरूह हो जाता है।

प्रश्न: क्या शुरु रमज़ान में पूरे रमज़ान के रोज़ों की नीयत की जा सकती है?

उत्तर: नहीं हर रोज़े की नीयत हर शाम को या रात में किसी वक़्त या सुब्ह को या दिन में दस ग्यारह बजे तक अलग–अलग करना ज़रूरी है सेहरी भी रोज़े की नीयत में शुमार है।

प्रश्न: हैज़ व निफ़ास वाली औरत के लिए रमज़ान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तर: हैज़ व निफास वाली औरत जब पाक हो जाये तब रोज़े रखे और हैज़ व निफास के सबब जो रोज़े छूट गए हों बाद में उनकी क़ज़ा करे।

प्रश्न: क्या हैज़ व निफास वाली औरत ज़बानी कुर्आन पढ़ सकती है?

उत्तर: हैज़ व निफास वाली औरत कुर्आन नहीं पढ़ सकती न देख कर न ज़बानी, कुर्आन को छू भी नहीं सकती अलबत्ता दुआएं पढ़ सकती है चाहे वह कुर्आन ही की क्यों न हो इसी तरह दुरूद व सलाम पढ़ सकती है।

प्रश्न: रमज़ान में तरावीह की नमाज़ का क्या हुक्म है?

उत्तर: रमज़ान में तरावीह की नमाज़ सुन्नते मुअक्किदा है ये नमाज़ इशा के फर्ज़ों और दो रकअ़त सुन्नतों के बाद दो–दो रकआ़त कर के बीस रकअ़त पढ़ी जाती है। 20 रकअ़त तरावीह के बाद तीन रकअ़त वित्र वाजिब भी जमात से पढ़ना चाहिए। जिसकी तरावीह की नमाज़ छूट गई हो वह अकेले 20 रकअ़त पढ़ ले और ये सुन्नत तर्क न करे।

प्रश्न: ऐतिकाफ़ का क्या हुक्म है?

उत्तर: ऐतिकाफ़ सुन्नते मुअक्किदा अलल किफाया है यानी अगर बस्ती का कोई एक आदमी भी ऐतिकाफ़ कर लेगा तो पूरी बस्ती की तरफ से सुन्नत अदा हो जायेगी, लेकिन अगर किसी ने ऐतिकाफ़ न किया तो पूरी बस्ती पर सुन्नत छोड़ने का गुनाह होगा।

उलमा ने लिखा है कि औरतें भी अपने घर में कोई जगह खास करके ऐतिकाफ़ कर सकती हैं और ऐतिकाफ़ में अस्लन लैलतुलक़द्र में जाग कर इबादत करना मक़सूद होता है। लैलतुलक़द्र आख़िरी अ़शरे की ताक रातों में किसी एक रात को होती है ये हमेशा बदलती रहती है।

प्रश्न: क्या ज़कात रमज़ान ही में देना ज़रूरी है?

उत्तर: ज़कात रमज़ान में देना ज़रूरी नहीं है बल्कि साहिबे निसाब के माल का जब साल गुज़र जाये ज़कात फर्ज़ हो जाती है लेकिन रमज़ान के महीने में सवाब सत्तर गुना हो जाता है इसलिए मुसलमान मालदार अपने माल की ज़कात रमज़ान में अदा करते हैं।

प्रश्न: सद–कए–फित्र ईद के दिन वाजिब होता है लेकिन क्या उसे रमज़ान में अदा कर सकते है?

उत्तर: सद़क–ए–फित्र अगर आख़िर रमज़ान में अदा कर दिया जाये तो ज़्यादा बेहतर है सवाब 70 गुना मिलेगा और ग़रीब मुसलमान उसको रोज़े की ज़रूरियात में भी ख़र्च कर सकता है और ईद की ज़रूरियात में भी।

प्रश्न: सदक–ए–फित्र या ज़कात के मुसतहिक़ कौन लोग हैं?

उत्तर: सद–कए–फ़ित्र या जक़ात ऐसे ग़रीब मुसलमानों का हक़ है जो साहिबे निसाब न हों, जिन दीनी मदरसों में ग़रीब तलबा को मुफ़्त खाना दिया जाता है उन मदरसों में ज़कात या सद–कए–फित्र पहुँचाना ज़्यादा बेहतर है।

❖❖❖

दुआ-ए-मगफिरत की दरख़्वास्त

"सच्चा राही" में "अंतर्राष्ट्रीय समाचार" के संकलनकर्ता जनाब अबू मोहम्मद आमिर नदवी की फूफी साहिबा का 1 फरवरी, 2024 को चंद दिनों की बीमारी के बाद इंतिकाल हो गया। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"।

मरहूमा नमाज़ रोजे की पाबंद और बहुत ही दानी खातून थीं। परिवार में शौहर के अलावा दो बेटे और एक बेटी है। अल्लाह समस्त परिवार जनों को सब्र अता फरमाए आमीन।

हम अपने समस्त पाठकों से दुआ–ए–मगफ़िरत की दरख़्वास्त करते हैं।

काल चक्र बदल रहा है?

इं0 जावेद इक़बाल

वाह क्या बात है, हमारे देश के यह पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्हें ईश्वर ने केवल सेवा के लिए बनाया है। वह पहले प्रधानमंत्री हैं जो कालाराम मंदिर में साफ सफाई भी करते हैं और प्राण–प्रतिष्ठा से पूर्व ग्यारह दिन का उपवास भी रखते हैं। दक्षिण भारत के अनेकों मंदिरों में घूम घूम कर पूजा अर्चना करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वह पुजारी प्रधान हैं और स्वयं उन का कहना है कि ईश्वर ने उन्हें जनसेवा के लिए ही दुनिया में भेजा है। ग्यारह दिन के उपवास के दौरान बेचारे ने केवल फलों को खा कर और जूस पी पी कर गुजारा किया, वह जमीन पर सोये और प्रधान संन्यासी के रूप में दिखाई दिये। बेचारे प्रधानसेवक ने ये सब जनता के पांच सौ वर्ष पूर्व खोए हुए स्वाभिमान को पुनः स्थापित करने के लिए किया। मगर आलोचना करने वाले हैं कि तरह तरह से प्रधानसेवक पर व्यंगों के बाण छोड़ रहे हैं। अभिमक्तेश्वर शंकराचार्य जी ने तो हद ही कर दी, कहने लगे कि वह तो प्राण–प्रतिष्ठा के योग्य ही नहीं हैं, उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि अयोध्या के नये मंदिर का निर्माण अभी पूरा ही नहीं हुआ है फिर प्राण–प्रतिष्ठा कैसी? उन्होंने कहा कि मंदिर किसी भगवान का शरीर प्रतीक होता है और मूर्ती उसकी आत्मा होती है। जब–तक शरीर पूर्ण नहीं होता उस में आत्मा कैसे प्रवेश कर सकती है। किसी ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा के लिए प्रधान सेवक इस लिए भी अयोग्य हैं क्योंकि इस शुभ कार्य के लिए मुख्य यजमान के साथ उसकी पत्नी का होना भी जरूरी है। मगर आलोचक भौंकते रहे और वृत तपस्वी प्रधान सेवक के काल चक्र का पहिया घूमता रहा। आखिरकार वह घड़ी आ गई जिसका भक्तों को उनके अनुसार सैंकड़ों वर्षों से इंतजार था। प्रधान सेवक ने संन्यासी का चोला पहन कर वेद मंत्रों के बीच मंदिर के अधूरे भवन में मूर्ती की स्थापना करदी, इस तरह प्राण–प्रतिष्ठा का कार्य पूर्ण करने के बाद उन्होंने कहा कि आज काल चक्र बदला है, अभी और बदलेगा, उन्होंने यह भी कहा कि सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। समझ में नहीं आया क्या राम कहीं चले गए थे? राम को यदि भगवान का दर्जा दिया जाता है तो भगवान को प्रत्येक संस्कारी और तपस्वी के मन में बसना चाहिए। समझ से परे तो यह भी है कि काल चक्र के बदलने से उनका क्या अर्थ है? क्योंकि हिन्दू अकीदे के मुताबिक काल चक्र तो केवल चार ही भागों में बंटा है।

सतयुगः– जिस में हर ओर सुख शांति, अमन चैन होता है, किसी प्रकार की बुराई, चोरी चमारी, लूट खसोट, दुराचार व्याभिचार इत्यादि नहीं होता।

त्रैता युगः– जिस में बुराइयों का उदय होना आरंभ हो जाता है,त्रैता युग में ही श्रीराम के आने का काल माना जाता है।

द्वापर युगः– जिस में बुराइयां बहुत बढ़ जाती हैं, सुख चैन और शांति का नाम व निशान बस कहीं कहीं ही दिखाई देता है। इसी में श्रीकृष्ण जी के आने का जमाना माना गया है।

कलि युगः– जिस में हर ओर बुराई ही बुराई नजर आती है, सुख शांति का अभाव हो जाता है। मान्यता यह है कि वर्तमान काल इसी कलि युग का ज़माना है। हम देख रहे हैं कि इस

जमाने में हर ओर बुराई अपने चरम पर है जो दुनिया के विभिन्न भागों में सीमित रूप में ही कभी पाई जाती थी। जैसे कुरआन के बयान के मुताबिक नाप तौल में कमी हजरत शुएब अलै० के जमाने और इलाक़े में थी। समलैंगिक व्याभिचार हजरत लूत अलै० के जमाने और इलाके में था। मूर्ती पूजा हजरत इब्राहीम अलै० के जमाने और इलाक़े में थी। हजरत मूसा अलै० के जमाने में स्वयं को पालनहार यानी खुद को खुदा का भ्रम फिरौन को था। मगर आज हम देख रहे हैं कि ये सभी बुराइयां दुनिया के हर इलाके में आम तौर पर फैल चुकी हैं ।

काल चक्र की बात निकली तो यह भी बताते चलें कि इस के चार भाग जो सतयुग, त्रैता युग, द्वापर युग, और कलि युग के नाम से जाने जाते हैं, इनकी अवधि लाखों वर्षों पर फैली हुई है। सतयुग सतरह लाख बीस हजार साल का माना गया है, त्रैता युग को बारह लाख छिआनवे हजार साल, द्वापर युग को आठ लाख चौंसठ हजार साल और कलि युग को चार लाख तैंतीस हजार साल का माना जाता है। इस प्रकार एक काल चक्र के वर्षों का कुल योग 43 लाख 13 हज़ार वर्ष हुआ। श्रीराम को त्रैता युग में आने वाला विष्णु का तीसरे नंबर पर अवतार माना गया है। अब गौर किया जाय तो उनको दुनिया में आए हुए लाखों साल गुजर चुके हैं। स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है क्या लाखों साल पहले धरती पर इंसान बसता था? वर्तमान में वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर जमीन की आयु साढ़े चार अरब साल अनुमानित की गई है। आरंभ में यह बहुत गर्म थी, कुरआन की रोशनी में कहा जाये तो यह आग का गोला थी। दो अरब साल इसे ठंडा होने में लग गए। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इंसान को धरती पर आए हुए लगभग एक लाख साल गुजरे हैं। आरंभ में इंसान डार्वन के नजरिए के आधार पर बन्दर की शक्ल में था। कुरआन के अनुसार इंसान से पहले धरती पर जिन्नात बसते थे,जो आग के बने थे, अधिक तापमान का उन पर कोई असर न था। पहले इंसान हज़रत आदम को धरती पर आए हुए दस हज़ार साल से अधिक नहीं हुए हैं।

पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय ने ''कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब'' नाम की अपनी शोध पुस्तक में संभावना व्यक्त की है कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, हनुमान जैसी विभूतियां जिन्नाती दौर की मालूम पड़ती हैं। नतीजा यह इन सब कथाओं, आस्था, प्रतिष्ठा के पीछे राजनीतिक खेल ज़्यादा है।

प्रधान सेवक ने बड़े गर्व और उत्साह के साथ कहा कि वर्षों की प्रतीक्षा के बाद राम आ गए हैं,अब वह तंबू में नहीं रहेंगे। ऐसा लगता है प्रधान सेवक के इन शब्दों से जैसे कि रामजी आम इंसानों के रहम व करम पर तंबू में आत्मा विहीन पड़े किसी महापुरुष के त्याग प्रयास और तपस्या का इंतजार कर रहे थे। ऐसे बोल बोलने वाले को बोलने से पहले कुछ तो सोचना चाहिए कि वह किस के बारे में बोल रहा है। दुनिया के एतबार से कोई कितना भी बड़ा हो जाए कितना भी बड़ा त्यागी और तपस्वी बन जाए, क्या वह किसी अवतार से बड़ा हो सकता है? प्राण– प्रतिष्ठा का अर्थ यह बयान किया जाता है कि जब किसी गुरु, महापुरुष, अवतार या भगवान की मूर्ति की स्थापना वैदिक तौर तरीकों से की जाती है तो गोया उस में प्राणों का संचार (रूह फूंकना) किया जाता है, यानी उस मूर्ति को जीवित कर दिया जाता है। अब यहां रुक कर जरा गौर कीजिए अवतार या भगवान

महान हुआ या प्राणों का संचार करने वाला? आर0एस0एस0 के सरसंचालक श्री मोहन भागवत ने प्रधान सेवक को तपस्वी की उपाधि देते हुए कहा कि उन्होंने इस कार्यक्रम के लिए कठोर व्रत रखा, उन से जितना कहा गया, उस से ज़्यादा करके दिखाया। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरी महाराज ने इस कार्यक्रम को भारत के स्वाभिमान की निशानी बताया है और कहा कि आज हमें एक महापुरुष मिले हैं जिसे भगवती जगदम्बा ने हिमालय से लौटा कर भेजा है कि आओ भारत माता की सेवा करो। कुल मिलाकर यही नतीजा निकलता है कि प्रधान सेवक को एक महापुरुष या भगवान के रूप में दिखाए जाने के प्रयास हो रहे हैं। और वह स्वयं भी ऐसे ऐसे पोज देकर अपने फोटो खिंचवा रहे हैं जैसे कोई देवता अवतरित हो गया हो। हक़ीक़त तो यह है कि अवाम को आस्था के नाम पर शिर्क व कुफ्र के अंधेरों में ढकेल कर राजनैतिक लाभ प्राप्त करने के प्रयास हो रहे हैं ।

प्रधान सेवक कह रहे हैं कि काल चक्र बदल रहा है, तो क्या अवतारों का आना फिर से शुरू हो रहा है? मगर अभी दसवें अवतार को तो पहचाना ही नहीं गया, जिसे अवतारवाद की थ्योरी के अनुसार चौथे नंबर के कलि युग में आना है। यदि वास्तव में नहीं पहचाना तो काल चक्र बदलेगा कैसे?और यदि उनके अनुसार बदल ही रहा है तो फिर उन्होंने दसवें अवतार को पहचान लिया है मगर स्वीकार नहीं किया है। पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय तो अपनी शोध पुस्तक में सिद्ध कर ही चुके हैं कि अंतिम अवतार आकर चला भी गया मगर भारत वासियों ने उसे पहचाना नहीं और वह मुहम्मद साहब ही थे।

❖❖❖

पृष्ठ....15...का शेष

रमज़ान दर अस्ल नफ्स को काबू करने और उसकी बुरी ताकत को कमज़ोर करने का एक सालाना तर्बियती निज़ाम है, इस निजाम से हर मुसलमान को साल में एक बार गुजरना पड़ता है। ज़रूरत है कि जिस तरह हम ज़िन्दगी की ज़रूरियात के लिए किसी भी तर्बियती कैम्प या तर्बियत गाह में वक्त, तवज्जुह व अमल के साथ गुजारते हैं, रमजान के इस निजाम में भी उसके आदाब और अहकाम के मुताबिक वक़्त गुजारा करें, ताकि हम उस सालाना तर्बियत गाह से पूरी तरह कामयाब हो कर और सालेह और सच्चे मुसलमान बन कर निकला करें।

रोज़े की इफादियत और अल्लाह के नज़दीक़ उसकी अहमियत की यह बड़ी दलील है कि अल्लाह ने दूसरे आमाल के मुकाबले में उससे अपनी पसन्द ज़्यादा जाहिर की है। हदीस शरीफ में अल्लाह तआला का यह इरशाद बताया गया है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आदमी के हर अच्छे अमल का सवाब दस गुने से सात सौ गुने तक बढ़ा दिया जाता है, मगर अल्लाह तआला का इरशाद है कि रोज़ा इस आम क़ानून से बालातर है, वह बन्दे की तरफ से खास मेरे लिए एक तोहफा है और मैं ही उसका अज्र व सवाब दूंगा। मेरा बन्दा मेरी रज़ा के वास्ते अपनी ख्वाहिशे नफ़्स और अपना खाना–पीना छोड़ देता है, पस मैं खुद ही अपनी मर्जी के मुताबिक उसकी इस कुर्बानी और नफ़्स कुशी का सिला दूंगा।

अल्लाह तआला हम सबको रमज़ान और उसके रोज़ों की क़द्र की तौफीक़ दे। आमीन!

❖❖❖

रमज़ान-इबादत का महीना

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

पवित्र कुरआन में पवित्र रमज़ान के बारे में उसका भावार्थ इस प्रकार है किः– रमज़ान वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया, उसकी विशेषता में है कि वह लोगों के लिए मार्ग दिखाने वाला है और खुली दलील है। तो जो व्यक्ति इस माह में मौजूद हो तो उसको ज़रूर रोज़ा रखना चाहिए। (सूरः बकरह–180)

उपरोक्त आयत से मालूम हुआ कि रमज़ान माह का कुरआन से एक विशेष लगाव है क्योंकि इस माह में पवित्र कुरआन उतरा और दूसरी बात कि इस माह की खास इबादत रोज़ा रखना है।

हज़रत सलमान फारसी रज़ि0 रमज़ान के सम्बन्धित बयान करते हैं कि शाबान माह की आखिरी तारीख को हज़रत मुहम्मद सल्ल0 मिम्बर पर तशरीफ लाए और फरमाया– ऐ लोगो तुम पर एक बड़ा ही मुबारक महीना आने वाला है, ऐसा महीना जिसमें एक ऐसी रात (शबे क़द्र) है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, अल्लाह ने इस महीने के दिनों का रोज़ा फर्ज़ और रातों की इबादत नफिल करार दी है। (मिश्कात)

रमज़ान के रोज़े रखना इस्लाम का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है, पवित्र कुरआन में रोज़ा रखने का उद्देश्य ये बताया गया है– ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़ा फर्ज किया गया जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फर्ज़ किया गया था ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

(सूरहः बकरह 183)

सच्ची बात यह है कि रोज़ा रखने से अनैतिकता पर रोकथाम लगती है और ये रोजा बुराईयों और गुनाहों से बचने का ढाल बन जाता है और इससे दिल की सफाई होती है और रूहानियत और रब की रहमत दस्तक देने लगती है।

इसलिए ईमान वालों का कर्तव्य है कि वह रोज़ा सिर्फ नाम का रोज़ा न रखें बल्कि रोजे की जो रूह है उसको समझने की कोशिश करें और उसके तकाज़ों को पूरा करें और कोशिश ये रहे कि हमारा नाम आला दर्जे के रोज़ेदारों में रब के यहाँ शुमार किया जाए उसके लिए ज़रूरी है कि बदनज़री, झूट, ग़ीबत, गाली गलौज़ और म्यूजिक आदि सुनने से बचा जाए।

हदीस की किताबों में है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के दौर में दो औरतों ने रोज़ा रखा तो दिन के आखिरी हिस्से में उनको सख़्त प्यास और भूख लगने लगी और इतनी हालत खराब हुई कि जान चली जाने का अंदेशा होने लगा। उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से रोज़ा तोड़ने की इजाज़त मांगने के लिए आदमी भेजा तो आप सल्ल0 ने उनके पास प्याला भेजा कि वह दोनों उसमें उल्टी करें, अतः एक ने उल्टी की तो आधा खून और ताज़ा गोश्त निकला, इसी तरह दूसरी ने उल्टी की, यहाँ तक कि प्याला भर गया। लोगों को हैरत हुई तो आप सल्ल0 ने फरमाया कि इन दोनों ने हलाल चीज़ से रोज़ा रखा और हराम पर अफ़्तार किया, ये दोनों बैठी ग़ीबत करती रहीं, यह खून और गोश्त उसी ग़ीबत (चुग़ली) का नमूना और मंज़र था।

रोज़ा रखने के फायदेः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद

सल्ल0 ने फरमाया कि जिहाद करो माले ग़नीमत हासिल करोगे, और रोज़ा रखो सेहतमंद रहोगे और सफर करो दूसरों से बेनियाज़ रहोगे। (तबरानी)

एक जगह हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि रोज़ा ऐसी ढाल है जिससे बन्दा जहन्नुम से बचाव करता है। (तबरानी)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया रोज़ा आधा सब्र है और हर चीज़ की ज़कात होती है और बदन की ज़कात रोज़ा है। (शुअबुल ईमान)

इसी तरह हज़रत अबू उमामा रज़ि0 कहते हैं कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत तक पहुँचा दे, तो आप सल्ल0 ने फरमाया कि तुम रोज़े रखा करो, इसलिए कि वह बेमिसाल अमल है।

(अत्तरगीब)

रोज़ा की परिभाषाः–

सुबहे सादिक़ से सूर्यास्त तक इबादत की नियत से खाने–पीने और सहवास से रुके रहना रोज़ा कहलाता है।

रोज़ा किस पर फर्ज है:–

रमज़ान के रोज़े हर अक़ल रखने वाले, बालिग और जो अक्षम (माजूर) नहीं है उस पर फर्ज है।

किन हालात में रोज़ा न रखने की छूट है:–

मरीज़, मुसाफिर, गर्भवती, दूध पिलाने वाली औरत, तीमारदार (जबकि उसके रोज़ा रखने से मरीज़ को नुकसान हो, निहायत कमज़ोर, भूख–प्यास से मजबूर, मुजाहिद (अल्लाह के रास्ते में निकलने वाला) जबकि उसके रोज़ा रखने से जिहाद में नुकसान हो) और पागलपन का शिकार व बेहोशी में रहने वालों को रोजा न रखने की छूट है, जब वह अपने हालात और परिस्थितियों से निकल जाएं तो रोजा की कज़ा करें। हाँ! यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे रोजे रखने पर कुदरत ही न रहे तो उसके लिए ये है कि वह हर रोजा के बदले में फिद्या एक सदक़ा फित्र की मिकदार दे दिया करे।

नियत के लिए अल्फाज़ कहना ज़रूरी नहीं:–

अगर किसी ने रोजा रखने का इरादा किया तो उसके लिए अल्फाज़ अदा करना ज़रूरी नहीं है बल्कि महज़ दिल में नियत कर लेना काफी है, यहाँ तक कि रोज़ा रखने के लिए सेहरी खाना भी नियत के बराबर होगा। ◆◆◆

पृष्ठ....22...का शेष

हमारे निकट यह तौल ठीक है परन्तु एहतियातन कुछ बढ़ा कर दे तो अच्छी बात है और ज़्यादा सवाब है, सदक–ए–फ़ित्र यद्यपि ईद के दिन वाजिब होता है परन्तु इसे रमजान के अन्त में अदा कर दिया जाए तो ज़्यादा सवाब मिलेगा।

सदक–ए–फ़ित्र और ज़कात गरीब मुसलमानों (जो साहिबे निसाब न हों) का हक़ है, ग़रीब ग़ैर मुस्लिम की मदद किसी और रकम से करें। ज़कात या सद–कए–फ़ित्र अपने बाप, दादा, माँ, दादी, नाना, नानी और बेटी, बेटों, पोती, पोतों, नवासी, नवासों को नहीं दे सकते, सादात को भी ज़कात या फ़ित्रे की रक़म नहीं दे सकते दूसरे ग़रीब सम्बन्धी जो साहिबे निसाब न हों, जैसे भाई, बहन या चाचा, साला, फूफा, फूफी वग़ैरह को दे सकते हैं। ग़रीब सादात हज़रात की मदद करना हो तो दूसरी हलाल कमाई से मदद करें।

अल्लाह हमारी मदद फ़रमाए और रमज़ान का पूरा पूरा हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ से नवाज़े।

❖❖❖

ऐलाने मिल्कियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	सैय्यद मो0 गुफ़रान नदवी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ–7
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	मोहम्मद ताहा अतहर
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	223 बगरिया दुबग्गा, काकोरी, लखनऊ, उ0प्र0–227107
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफत व नशरियात

मैं, मोहम्मद ताहा अतहर प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

यहूदी धर्मः-

मौजूदा यहूदी धर्म (जो परिवर्तित रूप में है) में महिलाएं विरासत में बिल्कुल हक नहीं रखती थीं, चाहे बीवी हो,बेटी हो, या माँ, बहन, हाँ बड़ा लड़का छोटे के मुकाबले में दोहरा हिस्सा अपने बाप के माल में से पाता है।

(अल–तरकतु वल मीरास, पृष्ठ–41, 42)

हिन्दू धर्मः-

इसके बारे में किताब के शुरू में "दूसरे धर्मों की झलकियां" के अंतर्गत इतना विवरण आ चुका है कि अब यहाँ ज़रूरत नहीं मालूम होती, पाठक वहाँ देख लें। उस क्रम की यहाँ कुछ ही बातें पेश की जाती हैं–

हिन्दू धर्म की प्रसिद्ध किताब "मनुस्मृति" (उर्दू अनुवाद, प्रकाशक– भाई ताराचंद छब्बर बुक सेलर, लाहौरी गेट, लाहौर) से प्रत्यक्ष रूप से कुछ धाराएं लिखी जाती हैं–

मनुस्मृति अध्याय 9, क्रम –2/ "रात दिन, महिला को पति द्वारा अधिकारहीन रखना चाहिए"।

मनुस्मृति अध्याय 9, क्रम –58: अगर संतान न हो तो अपने परिवार से अनुमति ले कर मालिक (यानी पति, आमतौर पर पति के लिए "मालिक" शब्द का प्रयोग मिलता है, इससे भी पत्नी और पति की दशा का पता लगाना आसान हो जाता है कि हिंदुओं में क्या थी?) के परिवार के संबंधी या देवर से संतान पैदा करे ।

मनुस्मृति अध्याय 9, क्रम –119– छोटा भाई बड़े भाई की पत्नी से बेटा पैदा करे तो उस बेटे के साथ चाचा लोग बराबर हिस्सा बांटें। (मनुस्मृति, पृष्ट–182, उर्दू अनुवाद)

हिन्दू धर्म में विवाह के अलावा भी एक और संबंध भी वैध माना गया जिसे "नियोग" कहते हैं, इसमें विवाहित महिला से भी दूसरा व्यक्ति कुछ समय के लिए विवाह कर सकता है, इस तरीके से पैदा होने वाली संतान वास्तविक पति की ही समझी जाती है, और ये दूसरे प्रकार का विवाह "नियोग" दस मर्दों से भी हो सकता है।

(विवरण के लिए देखिएः स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों का संग्रह "उपदेश मंजरी" जिल्द–107, प्रकाशक– सचिव आर्यमंडल, कैराना जिला मुजफ्फरनगर)

हिन्दू धर्म के विरासत के कानून में महिलायें भागीदार नहीं होतीं और बड़े बेटे के अलावा बाकी लड़के भी बाप के माल से वंचित हो जाते हैं, जैसा कि मनुस्मृति में हैः "माँ और बाप का सारा धन बड़ा बेटा ही लेवे"। (मनुस्मृति, उर्दू अनुवाद, पृष्ठः 181)

अरब का जाहिलीयत युगः–

इस्लाम से पहले अरबों में स्त्री की जो दुर्दशा थी उस से तो कुछ न कुछ अधिकांश ज्ञान रखने वाले अवगत ही हैं कि लड़की की पैदाइश ही सख्त शर्म की बात समझी जाती और इस कलंक को मिटाने के लिए उसे जीवित गाड़ दिया जाता था, जिसका कुरआन मजीद में भी बड़ी अच्छी शैली में जिक्र है। सूरः नहल आयत 58 में है–

अनुवादः– "और जब उनमें किसी को बेटी की खबर दी जाए तो सारे दिन उनका चेहरा काला रहे, और वो दिल ही दिल में घुटता रहे, जिस चीज की उसको खबर दी गई है, उसकी शर्म से लोगों से छिपा छिपा फिरे, या उसको जिल्लत पर लिए रहे या उसको मिट्टी में गाड़ दे,खूब सुन लो, उनका प्रस्ताव बहुत बुरा है"।

महिला को, चाहे वो बालिग ही हो, अपना विवाह करने का खुद अधिकार नहीं था, बल्कि उसका अभिभावक जिससे चाहे उसकी मर्जी के बिना भी विवाह कर सकता था, फिर पत्नी की हैसियत बिल्कुल लौंडी की तरह

थी जो सिर्फ पति की यौन इच्छा बल्कि हवस का शिकार बनने के सिवा और कोई अधिकार नहीं रखती थी, विधवा हो जाती तो उसके पति के वारिस उसके साथ मरने वाले के सामान की तरह मामला करते, यानी चाहे अपने पास रखते या दूसरे से विवाह कर देते, उसके पति के माल में से उसे कुछ भी न देते, क्योंकि छोड़े हुए माल में हक होने के लिए मर्द होना और ताकत वाला वाला होना जरूरी था, इस वजह से कम उम्र लड़के भी छोड़े हुए माल से वंचित रखे जाते और लड़कियां तो सभी वंचित रहतीं, इन बातों की तफसील हदीस की किताबों में बहुत मिलती है, यहाँ कुछ हवाले पेश किए जाते हैं ।

अबू अब्दुल्लाह अंसारी कुरतुबी (मृत्यु 671हि0) अपनी मशहूर तफसीर "अल–जामे लि अहकामिल कुरआन" में लिखते हैं–

अनुवादः– "जाहिलीयत के युग में विरासत ताकत व मर्द होने पर आधारित थी"।

(जिल्द 5, पृष्ठ–79, दारुल किताबिल अरबी 1387 हि0)

और इमाम अबू बक्र जस्सास राजी (मृत्यु 370 हि0) ने अहकामुल कुरआन में लिखा है–

अनुवादः–"वो लोग बच्चों और औरतों को वारिस नहीं बनाते बल्कि वो उस शख्स को वारिस बनाते जो घोड़े पर सवार हो कर जंग कर सकता हो और जंग में धन हासिल कर सकता हो" ।
(जिल्द 2, पृष्ठः 75, दारुल कितबिल अरबी, बैरूत)

तफ़सीर के इमाम इब्ने जरीर तबरी (मृत्युः 310 हि0) ने विरासत वाली आयात के नाजिल होने के कारण बताते हुए जिक्र किया है–

अनुवादः– "या रसूलल्लाह! मेरे पति का निधन हो गया और उन्हों ने मुझे और अपनी बेटी को छोड़ा, तो हमें विरासत में हिस्सा नहीं दिया गया, उसके बेटे के चाचा ने कहा या रसूलल्लाह ! वो न घोड़े पर सवार हो सकती है और न कोई बोझ उठा सकती है और न किसी दुश्मन को नुकसान पहुँच सकती है ।
(जिल्द 4, पृष्ठः 263, मुस्तफा बाबी, हलबी, मिस्र)

आमतौर पर बड़ा लड़का ही छोड़े हुए माल का हकदार समझा जाता था, लिहाजा इसी नियम की वजह से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब का माल सिर्फ अबू तालिब को मिला ।
(शरह मुस्लिम नववी, जिल्द 2, पृष्ठ–436)

❖❖❖

लखनऊ के प्रसिद्ध डॉ0 नज़र अहमद का निधन

अपनी चिकित्सा एवं राष्ट्रीय सेवाओं के लिए जाने माने चिकित्सक डॉ0 नज़र अहमद का 15 फरवरी, 2024 को संक्षिप्त बीमारी के बाद अपने निवास स्थान कैसरबाग़ में इन्तिक़ाल हो गया। वह लगभग 84 वर्ष के थे ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''।

डॉ0 साहब का हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 और हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0 से विशेष सम्बन्ध था। इसी प्रकार पूरे हसनी परिवार से डॉ0 साहब को अक़ीदत और मुहब्बत थी, डॉ0 साहब नदवा की मजलिसे इन्तिज़ामिया के सदस्य भी थे। अल्लाह तआ़ला मरहूम के दरजात बुलन्द फ़रमाए। डॉ0 साहब की बेवा के अलावा दो बेटे डॉ0 अरशद अहमद सर्जन *KGMU* और हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ0 मुहम्मद नासिर और एक बेटी है। डॉ0 साहब की नमाज़ जनाज़ा नाज़िरे आम नदवतुल उलमा मौलाना सै0 मुहम्मद जाफ़र हसनी नदवी की इमामत में अदा की गई और तदफ़ीन लखनऊ के ऐतिहासिक क़ब्रिस्तान ऐशबाग़ में हुई। हम ''सच्चा राही'' के समस्त पाठकों से दुआए मग़फिरत की ख़ुसूसी दरख़्वास्त करते हैं। ❖❖

ब्रेन ड्रेन (प्रतिभा पलायन) रोकने के प्रभावी उपाय आवश्यक

प्रो0 अतीक़ अहमद फ़ारूक़ी

ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारतीय उच्च मध्ययम वर्ग के छात्र बड़ी संख्या में जा रहे हैं। साथ ही गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तिलंगाना के किसानों के बच्चे भी अपनी भूमि बेच कर शिक्षा के लिए विदेश गये, वर्ष 2019 ई0 में सात लाख छात्र उच्च शिक्षा के लिए विदेश गये, वहीं प्रति वर्ष मात्र चालीस हज़ार विदेशी छात्र का भारत आना यह बताता है कि वैश्विक स्तर पर भारतीय उच्च शिक्षा की छवि अच्छी नहीं है। पिछले दिनों राँची में आई0 आई0एम0 में द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय विषय पर आयोजित संगोष्ठी में इस बात पर विचार किया गया था कि भारतीय छात्र विदेश तो जा रहे हैं, पर ऐसा किया जाये कि विदेश से भी छात्र भारत आने लगें। क्या निकट भविष्य में विदेशी छात्र भी बड़ी संख्या में भारत शिक्षा प्राप्त करने आयेंगे? यह बहुत विस्तृत विषय है और इसके विभिन्न आयाम हैं।

वास्तव में छात्रों को विदेश जाने से नहीं रोका जा सकता है। एक समय था जब महात्मा गाँधी, पण्डित जवाहर लाल नेहरू और डॉ0 अम्बेडकर भी विदेश गये थे, पर वह लौट कर आये और देश की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। आज भी छात्रों को बाहर जाने से रोका नहीं जा सकता, पर ऐसी कोशिश तो हो सकती है कि कम से कम संख्या में छात्रों को विदेश जाना पड़े, इसके लिए मूल रूप से शिक्षा का बजट बढ़ाने की आवश्यकता है। शिक्षा के बजट को तीन प्रतिशत से बढ़ा कर तत्काल 6 प्रतिशत करने की आवश्यकता है। साथ ही अपने यहां जो उच्च कोटि की बड़ी शिक्षण संस्थायें हैं उनके विस्तार व सुधार से ज़्यादा उनको स्वायत्ता देनी पड़ेगी। अच्छे शिक्षकों को राष्ट्रनिर्माता के रूप में ज़्यादा सम्मान देना पड़ेगा। ऐसे बहुत से उपाय हैं जो उच्च शिक्षा के सुधार के लिए अपनाये जा सकते हैं। जिनके पास पैसा है वह तो विदेश पढ़ने अवश्य जायेंगे। उनके जाने की ज़्यादा चिन्ता नहीं करनी चाहिए। बाहर वेतन भी ज़्यादा मिलता है तो भारत से जाने वाले अगर वहां कमाकर एक अंश भारत में भेजें तो यह भी देश के लिए लाभप्रद है। देश में तीन लाख रूपये कमाने से अच्छा है कि बाहर रह कर तीन करोड़ रूपये कमाये जायें और उनमें से एक करोड़ रूपये अपने देश में भेज दिये जायें इससे भी देश की आय में वृद्धि होगी।

भारतीय युवकों का उच्च शिक्षा के लिए बाहर जाना और वहीं रहने लगना चिन्ताजनक है। विदेश जाने वाले सक्षम लोगों को वापस लाने की कोशिश अवश्य की जानी चाहिए। ऐसा चीन ने किया है। उसने जाने वाले विद्वान नागरिकों को श्रेष्ठ सुविधाएं, निवास, खाने–पीने और वेतन दर उपलब्ध करा कर वापस बुला लिया और उसका उसे पूरा लाभ मिला। चीन आज ए0आई0 और आर्थिक विकास के विभिन्न क्षेत्रों में भारत से कम से कम दस वर्ष आगे हैं। भारत भी अगर चीन की भांति अपने नागरिकों को स्वदेश वापस बुलाये तो उसके विकास की गति दोगुनी हो सकती है, परन्तु जिनका वार्षिक वेतन विदेश में करोड़ों में है क्या उन्हें भारत में रोकने की व्यवस्था सम्भव है। चीन ने इस पर समय रहते विचार किया और आज वह लाभ में है। दूसरी ओर हमें विदेशी छात्रों को अपने यहां आकर्षित करने के लिए ज़्यादा प्रयतन करने होंगे। भारतीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय

ने एक 'स्टडी इण्डिया' पोर्टल 6 माह पूर्व प्रारम्भ किया है। उसमें देश की सर्वोच्च 100 संस्थाओं के पृष्ठ बनाये गये हैं जहां विदेशी छात्र अपनी पसन्द के पाठ्यक्रम को चुन सकते हैं। आज विदेशी छात्रों को देने के लिए हमारी संस्थाओं और सरकार के पास क्या है? क्या यहां के शिक्षकों या प्रोफेसरों को इसकी कोई चिन्ता है? हमारे छात्र आख़िर क्यों बाहर जा रहे हैं? श्रेष्ठ प्रोफेसर भी तो विदेशों में अच्छे अवसरों को ढूँढ़ते रहते हैं। एक पहलू यह भी है कि भारत में भी जो विश्व स्तरीय संस्थाएं हैं, उनमें प्रवेश के लिए प्रर्याप्त सीटें नहीं हैं। ऐसी संस्थायें सभी को तो प्रवेश नहीं दे सकतीं। पिछले कुछ वर्षों में कुछ उच्च कोटि की निजी संस्थाएं भी अस्तित्व में आई हैं। जिनका वार्षिक शुल्क पचास लाख रूपये तक है और वह विश्व स्तर की शिक्षा दे रही हैं। फिर भी लोग बाहर जा रहे हैं क्योंकि वहां उनका विश्वस्तरीय नेटवर्क बनता है और आसानी से रोजगार भी मिल जाते हैं। बाहर जाने के कई कारण हैं, मगर हमें अपना ध्यान उस बात पर केन्द्रित करना चाहिए कि बाहर जाने वाले हमारे छात्र लौट कर आयें और बाहर के छात्रों को पढ़ने के लिए भारत आने के विषय में वृद्धि हो।

जिस तरह ब्रिटेन और अमेरिका जैसे देश अपने यहां काम करने के लिए विदेशी छात्रों को दो तीन वर्ष का वीज़ा प्रस्तावित करते हैं, ठीक उसी तरह भारत भी कर सकता है। इससे संसार में बहुत से देशों के युवा भारत की ओर आकर्षित होंगे। एक समय था जब बड़ी संख्या में एशियाई व अफ़्रीक़ी देशों के छात्रों की पहली पसन्द भारत ही था। भारत को उन देशों के छात्रों को आकर्षित करने के लिए प्रचार करना चाहिए। ठीक उसी प्रकार जैसे भारत में दूसरे विकसित देशों की संस्थायें करती हैं। शिक्षा को अन्तर्राष्ट्रीय बनाने की कार्यवाही ठीक से होनी चाहिए। हमारी सरकारों, दूतावासों, यूनिवर्सिटियों को बाहर की उच्च शिक्षा संस्थाओं के साथ मिल कर दूसरे देशों में आक्रमक ढंग से खूब प्रचार और व्यापार करना चाहिए। भारत में भी महानगरों के आस–पास 'नॉलेज विलेज' बनाया जाना चाहिए। हमारे सामने दो तरह के मॉडल हैं जिन पर विचार किया जा सकता है। जैसे दुबई में 'नॉलेज विलेज' है। मैं तो दुबई नहीं गया, लेकिन मेरा एक साथी दुबई गया था और उन्होंने यह सूचना दी है। याद रहे कि दुबई से सीख कर ही गुजरात की 'गिफ्ट सिटी' में राज्य सरकार ने बड़े–बड़े भवन का निर्माण कर दिया और विदेशी शिक्षण संस्थाओं को आमंत्रित किया। वहां शिक्षण संस्थाओं को भूमि खरीदने की आवश्यकता नहीं होती। उधर दुबई के 'नॉलेज विलेज' में संसार की बीस से पचीस विदेशी यूनिवर्सिटियाँ अपनी सेवायें दें रही हैं। हमारे देश में भी ऐसा हो सकता है। संस्थाओं को अधिक से अधिक स्वायत्ता देनी होगी और प्रतिबन्धित भी करना होगा कि शैक्षणिक शुल्क से आया पैसा भारत में शिक्षा ही में लगेगा।

एक दूसरा मॉडल सिंगापुर का है। उसने अपने यहां ऐसे विशिष्ठ विश्व स्तरीय शैक्षणिक संस्थाओं को भी आमंत्रित किया जो कहीं जाना पसन्द नहीं करते थे। संस्थायें स्थापित करने को वहां इतना सरल बना दिया गया है कि श्रेष्ठ संस्थायें आईं और सिंगापुर के आकर्षण का कारण बन गये। भारत के पास भूमि की कोई कमी नहीं है। हम अगर ठान लें तो आसानी से कई स्मार्ट नालेज सिटी का निर्माण कर सकते हैं जहां विकसित देशों की तुलना में शिक्षा भी कम खर्चीली हो सकती है और हिन्दुस्तान विकसित देशों को कम्पटीशन भी दे सकता है।

❖❖❖

ताजुल मसाजिद-भोपाल

शमीम इक़बाल खाँ

सन् 629 ई0 में अरब से कुछ मुसलमान व्यापार व तबलीग के सिलसिले में भारत के केराला इलाके में आये थे. उस समय वहॉ ब्रहमन राजा चीरामल पीरूमल का राज था। राजा की आज्ञा से उनके द्वारा दी गई भूमि पर भारत की पहली मस्जिद का निर्माण हुआ, यह मस्जिद केरला के जिला थ्रेसूर में स्थित है यहॉ पहली मस्जिद नहीं बनी बल्कि राजा चीरामल पीरूमल पहले व्यक्ति भी थे जिन्होंने इस्लाम को स्वीकार किया।

एक पुरानी मस्जिद गुजरात में भी है जिसे उक्त चीरामल जुमा मस्जिद से पहले की बताई जाती है, हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है परन्तु मस्जिद स्वयं बोल रही है कि यह उस समय की बनी थी जब मुसलमान बैतुल मक़्दिस को क़िबला मान कर उसकी ओर रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे, यह क्रम इस्लाम के आरम्भ से तेरह साल अर्थात् 610 ई0 से 623 ई0 तक जारी रहा इसके बाद अल्लाह के हुक्म से 'काबा' को क़िबला बनाया गया, इंशाअल्लाह रहती दुनिया तक यह सिलसिला जारी रहेगा।

ताजुल मसाजिदः–

उक्त में भारत की दो प्राचीन मस्जिदों का सूक्ष्म में वर्णन किया गया, अब भारत की सब से बड़ी मस्जिद का वर्णन प्रस्तुत है जो मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में 'ताजुल मसाजिद' के नाम से सारे संसार में विख्यात है। यह मस्जिद भारत की सब से बड़ी तो है ही साथ–ही–साथ ऐशिया की बड़ी मस्जिदों में दूसरे नम्बर पर है, इसका आन्तरिक क्षेत्रफल 23000 वर्ग मीटर है अर्थात 250000 वर्गफुट, यह मस्जिद मुगल शहंशाह शाहजहॉ द्वारा निर्मित दिल्ली जामा मस्जिद से भी बड़ी है।

ताजुल मसाजिद का शिलान्यास राज्य भोपाल की तीसरी शासक महारानी नवाब 'शाहजहाँ बेगम' ने 1887 ई0 में किया था। शाहजहॉ बेग़म भोपाल की वह महिला शासक थीं जिन्हें मुग़ल बादशाह शाहजहॉ ही की भांति भवन बनवाने का बड़ा शौक था, भोपाल में अपने निर्माण के शौक में कई भवन निर्मित करवाये जिनमें 'ताजमहल', 'आली मंज़िल', 'बेनज़ीर', 'गुलशन आलम' जैसे आकर्षक भवन हैं इनमें सबसे उत्तम ''ताजुल मसाजिद'' है'। इसके निर्माण के लिये बेगम साहिबा ने अपने ख़ज़ाने का मुँह खोल दिया था। इसके निर्माण के लिये आगरा से पत्थर भोपाल लाये गये थे, मथुरा और जयपुर के कारीगर निर्माण कार्य में लगाये गये थे, खम्भों और जंगलों पर बहुत ही आकर्षक नक्काशी की गई, दालान में विशेष प्रकार के पत्थर 'संग–ए–मूसा' से पिचकारी करके तैयार हुए, बिल्लौरी फ़र्श इंगलैण्ड से मंगवाया गया। मस्जिद को सजाने के लिये झाड़ व फ़ानूस और शीशे का अन्य सामान बेल्जियम की एक मशहूर कंपनी से अधिक मूल्यों पर तैयार कराया गया। मस्जिद का नक्शा लाहौर की शाही जामा मस्जिद को सामने रख कर आंशिक परिवर्तन के साथ तैयार कराया गया। इस भव्य निर्माण के योजना को कार्यान्वित करने के लिये 'अल्ला–दिलाय' नामक अपने जमाने का प्रसिद्ध एवं अनुभवी निर्माण कार्य में दक्ष था। जिस प्रकार आगरा के ताजमहल के निर्माण के लिये 'शीराज़' नामक कारीगर शाहजहाँ को मिल गया था उसी प्रकार बेगम शाहजहाँ के समय से

भोपाल के तमाम भवनों एवं मस्जिदों पर 'अल्ला–दिलाय' के हाथों का कमाल दिखता है। पन्द्रह साल तक जारी रहने वाली तामीर में मस्जिद की दोनों मीनार लगभग आधी, इसकी छत व मेहराबें, उत्तरी व दक्षिणी दालान के केवल खम्भे और पूर्वी व पश्चिमी बुर्जियॉ ही निर्मित हो पाईं थीं कि बीसवीं शताब्दी के आते–आते अर्थात् 1901 में शाहजहॉ बेगम की मृत्यु हो गई और वह मस्जिद को पूर्ण कराने की इक्षा को दिल में लिये दुनिया से चल बसीं।

उन्होंने ताजुल मसाजिद के लिये बिल्लोर के मुसल्ले, कलस, फ़व्वारे और ज़नाने हिस्से के लिये बिल्लोरी फ़र्नीचर मंगवाया था। बेगम साहिबा की यह इक्षा थी कि मस्जिद का निर्माण पूर्ण होने पर उद्घाटन के अवसर पर निर्माण कार्य सम्पन्न करने वाले सभी सदस्यों को दो–दो माह का वेतन नक़दी के रूप में और इतने ही मूल्य के जोड़े बाटे जायेंगे और इसके लिये हज़ारों की तादाद में 'अतलस', 'कमख़्वाब' और अन्य कीमती कपड़े ख़रीद कर भण्डारण कर लिया गया था परन्तु बेगम साहिबा की आंखें बन्द होते ही निर्माण कार्य रुक गया, मैदान में पड़े हुए और तराशे हुए पत्थर इस प्रतीक्षा में रहे कि उनका उपयोग निर्माण में कब किया जाता है।

इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि नवाब सिद्दीक हसन ख़ॉ की हौसलामन्द बेगम नवाब शाहजहॉ साहिबा की ज़िन्दगी अगर वफ़ा करती तो उनके जीवन में ही ताजुल–मसाजिद पूर्ण हो जाती तो मुग़ल बादशाह शाहजहॉ के बनवाये हुए ताजमहल की तरह इस मस्जिद की गणना भी अजायबात (आश्चर्य) में न सही तो निर्माण कला अपना लोहा अवश्य मनवाता परन्तु पचास वर्ष तक यह अधूरी मस्जिद जो अल्लाह की इबादत से आबाद होने वाली थी, जहॉं अल्लाहुअकबर की सदायें गूंजने वाली थी वही मस्जिद वीरानी का शिकार हो कर अवांछनीय तत्वों का अड्डा बन गयी। शाहजहॉ बेगम की बेटी नवाब सुलतान जहॉ चूँकि अपनी माता से नाराज़ थीं इस कारण उन्होंने माता के अधूरे काम को पूर्ण न कराया। उनके बेटे नवाब हमीदउल्लाह खॉ की हिम्मत भी जवाब दे गई और वह भी अपनी नानी के इस भव्य परियोजना को पूर्ण नहीं करा सके। पूरे पचास साल बाद अर्थात् 1950 में यह काम जो बादशाहों ने शुरू किया था परन्तु उनके उत्तराधिकारी मस्जिद को पूर्ण कराने में असमर्थ रहे। मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी के कथनानुसार 'एक बोरिया नशीन उलेमा के श्रेणी के व्यकित के भाग्य में लिखा था कि वह इस काम को पूरा करें अतः हज़रत शाह मोहम्मद याकूब साहब मुजद्दिदी रह0 ने अपने लायक़ मुरीद मौलाना मोहम्मद इमरान खॉ नदवी अज़हरी (भूतपूर्व प्रिंसपल दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ) को निर्देशित किया कि वह मस्जिद के निर्माण का काम आरम्भ करें. मौलाना केवल अल्लाह के भरोसे नदवतुल उलमा जैसे मुख्य दीनी दर्सगाह के प्रबन्धन की जिम्मेदारी छोड़ कर अपने कुछ भरोसेमंद साथियों को साथ लेकर ताजुल मसाजिद में व्यस्त हो गये और फिर ऐसा चमत्कार हुआ कि इस वीरान मस्जिद में न केवल दारुलउलूम ताजुल मसाजिद की नीव पड़ गई वरन् मस्जिद के निर्माण का काम भी आरम्भ हो गया। उस समय अल्लामा सैयद सुलेमान नदवी रियासत भोपाल में क़ाज़ी के पद पर थे आपने बड़ा उत्साहवर्धन किया। मौलाना इमरान खॉं साहब ने मस्जिद के निर्माण आदि में अपनी पूरी ताक़त लगा दी। देश और विदेश के सरहदों की दूरियॉं उनके हौसलों के आगे सिमट कर रह गईं। सफ़ीरों को

विदेशों में भेज कर मुसलमानों को मस्जिद के निर्माण में सहयोग कराया यहाँ तक कि 1984 में लोगों के सहयोग से मस्जिद का निर्माण कार्य पूरा हुआ। छत्तीस वर्षों की लगातार दिन व रात हज़ारों कारीगरों और मज़दूरों के कठिन परिश्रम और अल्लाह के बन्दों के आर्थिक सहायता और दुवाओं से दो करोड रूपये की लागत से यह प्रोजेक्ट पूरा हुआ।

इस के निर्माण में मसजिद की सभी आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया साथ ही साथ इसे भव्य एवं आकर्षक बनाने में पूरा ध्यान दिया गया। मस्जिद का केन्द्रीय हाल का क्षेत्रफल लगभग 24हज़ार वर्गफुट है, प्रत्येक मीनार की ऊँचाई 206 फुट, घेरा 28 फुट और गुम्बद 40 फुट पर केन्द्रित है। मस्जिद के उत्तर व दक्षिण में पत्थरों की खूबसूरत जालियों की शोभा देखने से बनती है। पर्दे–दार महिलाओं के लिये दो पृथक भाग भी निर्मित किये गये हैं जो संग तराशी का शाहकार कहे जा सकते हैं। मस्जिद की शोहरत और अज़मत सारे संसार से परिचित कराने के लिये यहाँ 54 वर्षों तक होने वाले तबलीगी जमात के इज्तेमआ की मुख्य भूमिका रही है जिसमें प्रति वर्ष पूरे भारत और भारत के बाहर से लाखों की संख्या में अल्लाह के बन्दे सम्मिलित होते थे।

ताजुलमसाजिद एक नज़र में:–

इस मस्जिद का निर्माण 1857 में भोपाल की तीसरी महिला शासक शाहजहॉ बेगम ने शुरू किया था। मस्जिद के निर्माण का काम 1901 तक जारी रहा। इस वर्ष जब नवाब शाहजहॉ बेगम की मुत्यु हुई तो मस्जिद के निर्माण का कार्य रुक गया। आज़ादी के बाद मशहूर आलिम–ए–दीन मौलाना मोहम्मद इमरान खाँ साहब ने ताजुल मसाजिद का कार्य पुनः शुरू कराया और उनकी नेक कोशिशों से यह शानदार मस्जिद पूर्ण हो सकी।

ताजुल मसाजिद को वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है। पूरी मस्जिद लाल पत्थरों से निर्मित हुई है परन्तु नवाब शाहजहाँ बेग़म इस ऐतिहासिक मस्जिद को सफ़ेद संगमरमर से निर्मित कराना चाहती थीं, मस्जिद के निर्माण के लिये पत्थर बेलजियम से मंगा लिये गये थे, यह पत्थर साफ़ दर्पण के मानिन्द थे, इस में मनुष्य की छवि दिखाई दे रही थी जिस पर आलिमों ने नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं बताया इस कारण इन पत्थरों को हटवा दिया गया और लाल रंग के पत्थरों से मस्जिद निर्मित हुई।

बेलजियम से मंगाये गये वह तमाम पत्थर मस्जिद के मौलाना सुलैमान नदवी लाइब्रेरी में मौजूद हैं–

मस्जिद एक ऊँचे टीले पर निर्मित की गई है।

मस्जिद के मुख्य द्वार की ऊँचाई 74 फ़िट है. इसके भीतरी उत्तरी भाग में ज़नान ख़ाना है जहॉ पर्देदार महिलायें आकर नमाज़ पढ़ती हैं।

मस्जिद में दो हौज़ के साथ अन्दर दाख़िल होने के लिये नौ दरवाज़े हैं।

भोपाल के आलमी तब्लीगी इज्तिमा का आयोजन 2001 तक इसी मस्जिद में होता था, जब आलमी तब्लीग़ी इज्तिमा में देश और विदेश से आने वाली जमातों की संख्या लाखों में पहुंच गई और ताजुल मसाजिद में जगह कम पड़ने लगी तो आलमी इज्तिमा को यहाँ से दूसरी जगह पर स्थानान्तरित कर दिया गया।

ताजुल मसाजिद में दर्स व तदरीस का सिलसिला जारी है जहॉ पर हज़ारों लोग यहॉ से दीनी और दुनियावी इल्म प्राप्त कर अपने मुल्क और दूसरे मुल्कों में इल्म की शमा रोशन कर रहे हैं।

❖❖❖

स्वास्थ्य

कई गुणों से भरी गुड़ की चाय, सेहत रखे दुरुस्त

अशोक खरवार, आयुर्वेदाचार्य

हमारे देश में सुबह उठकर चाय पीने का चलन है। चाय हमारे शरीर की सुस्ती को दूर कर ऊर्जा से भर देती है। चाय को मीठा बनाने के लिए चीनी का इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन लंबे समय तक हेल्दी बने रहने के लिए आप चाय में गुड़ का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसे आम बोलचाल की भाषा में गुड़ की चाय कहते हैं। सर्दियों में इस चाय का इस्तेमाल ज़्यादा किया जाता है। चीनी के मुकाबले गुड़ हमारी सेहत के लिए फायदेमंद होता है। गुड़ की चाय आयरन, फाइबर, पोटैशियम आदि से भरपूर होती है।

इम्यूनिटी करे स्ट्राँन्गः–

वैसे गुड़ की चाय को सर्दी के मौसम में पीना बेस्ट माना जाता है। मौसम में बदलाव होने की वजह से लोग बीमार होने लगते हैं। गुड़ की चाय से रोग प्रतिरोधक क्षमता बूस्ट होती है। अदरक डालने से इसके गुण बढ़ जाते हैं।

वजन घटाने में फायदेमंदः–

अगर आप वजन कम करना चाहते हैं तो ऐसे में आप सबसे पहले चाय से तौबा कर लेते हैं जबकि गुड़ वाली चाय के साथ ऐसा नहीं है। गुड़ की चाय मेटाबॉलिज्म बूस्ट करती है, जिससे वजन को कम करने में मदद मिलती है।

गुड़ का सेवन पेट के रोगियों के लिए बहुत फायदेमंद होता है, इसके अलावा ब्लड सर्कुलेशन भी ठीक करता है।

सर्दी–खाँसी से बचावः–

अगर आप गुड़ की चाय में लौंग, दालचीनी, अदरक, तुलसी डालते हैं तो यह एंटीऑक्सीडेंट्स और एन्टीवायरल प्रॉपर्टीज से भरपूर हो जाती है और सर्दी खाँसी में लाभदायक साबित होती है।

पाचन रखे दुरुस्तः–

यदि आपका पाचन तंत्र अक्सर खराब रहता है तो आप गुड वाली चाय का सेवन करें। लगातार गुड़ वाली चाय पीते रहने से डाइजेस्टिव एंजाइम्स ऐक्टिवेट हो जाते हैं। इससे डाइजेशन संबंधित समस्याओं से राहत मिलती है।

एनीमिया करे दूरः–

गुड़ में आयरन भरपूर मात्रा में होता है। आयरन लाल रक्त कोशिकाओं को फेफड़ों और शरीर के विभिन्न हिस्सों तक ऑक्सीजन पहुंचाने में मदद करता है। रोजाना गुड़ की चाय पीने से शरीर में आयरन की कमी नहीं होती है।

जोड़ों के दर्द में राहतः–

गुड़ की चाय विटामिन और खनिज जैसे आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होती है, जो जोड़ों के दर्द और हड्डियों की समस्याओं को कम करने में मददगार मानी जाती है।

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फिरत की दरख़्वास्त

सुलतानपुर के एक मशहूर डॉ0 सिद्दीक़ अहमद साहब का लंबी बीमारी के बाद 15 फ़रवरी, 2024 को इन्तिक़ाल हो गया। वह तकरीबन 70 साल के थे "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"।

डॉ0 साहब बड़े दीनदार, शरीफ, संयमी और गरीब परवर इन्सान थे, खानदानी शराफ़त उनमें कूट–कूट कर भरी थी, वह उलमा और दीनदारों से बड़ा तअल्लुक़ रखते थे। अल्लाह उनकी मग़फिरत फरमाये और उनके समस्त परिवार जनों को सब्र अता फरमाये। आमीन!

हम अपने पाठकों से दुआ की दरख़्वास्त करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

अमेरिका में पहली बार किसी अपराधी को नाइट्रोजन गैस से सजा-ए-मौत:-

विदेशी समाचार एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार 58 वर्षीय केनेथ स्मिथ को अमेरिकी राज्य अलबामा में होल्मेन केरक्शनल फेस्टिलिटी में आज स्थानीय समयानुसार सुबह 8:25 बजे मृत घोषित कर दिया गया। स्मिथ को 1989 में एक उपदेशक की पत्नी की हत्या के लिए मौत की सजा सुनाई गई थी। 2022 में उन्हें घातक इंजेक्शन के ज़रिए फाँसी देने की कोशिश की गई लेकिन वह असफल रही और अब नाइट्रोजन गैस की मदद से दूसरी कोशिश की गई है। अपराधी द्वारा पहने गए मास्क में नाइट्रोजन गैस छोड़ी गई, साँस लेने पर उसे ऑक्सीजन नहीं मिली और उसकी मृत्यु हो गई। 1982 के बाद नाइट्रोजन गैस से मृत्युदण्ड लागू किया गया, जो अलबामा राज्य द्वारा मृत्युदण्ड का सबसे कम दर्दनाक तरीका था। संयुक्त राज्य अमेरिका में जहरीली गैस से पहली फाँसी 1999 में हुई थी जब एक अपराधी को हाइड्रोजन साइनाइड गैस से मौत के घाट उतार दिया गया था।

अरबपति ब्रिटिश बिजनेसमैन ने कबूला इस्लाम:-

रियाज (एजेंसी) ब्रिटिश अरबपति और गायक डैनी लेंबो जिन्होंने संगीत वाहनों से दिलचस्पी होने के कारण अपना नाम डैनी केर्न से बदल कर डैनी लेंबो कर लिया था, ने इस्लाम कबूल कर लिया है। रियलिटी टीवी स्टार और उद्यमी डैनी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर इस्लाम कबूल करने की घोषणा की। उन्होंने मक्का के खान–ए–काबा में उमरा करते हुए अपना एक वीडियो साझा किया, कैप्शन के साथ लिखा कि– आप कभी नहीं जानते कि जीवन आपको कहां ले जाएगा। मैं व्यापार के लिए सऊदी अरब गया था लेकिन मेरा काम जल्दी पूरा हो गया और फिर एक व्यक्ति से मुलाकात हुई जो मुझे मक्का ले गए, जहां मेरी नई आध्यात्मिक और भावनात्मक यात्रा शुरू हुई। उन्होंने कहा ''अब मैं एक नए मुसलमान के रूप में लंदन वापस आ गया हूं। डैनी के भावनात्मक वीडियो में, उन्हें काबा के सामने रोते हुए देखा जा सकता है। इंस्टाग्राम से मुख्य अंश मक्का की अपनी यात्रा पर एक दोस्त के साथ एक तस्वीर भी साझा की और लिखा'' शुक्रिया मेरे भाई बासित –आपने मुझे जीवन का वास्तविक अर्थ और उद्देश्य समझाए। डैनी लेंबो, जिनका असली नाम डैनी केर्न है, ने अतालवी सुपर कार लैंबर गेनी से अपने लगाव का इजहार करने के लिए लैंबो को अपने नाम का हिस्सा बनाया। एक अनुमान के अनुसार उनकी कुल संपत्ति 50 मिलियन पाउण्ड है, जिसका एक बड़ा हिस्सा उन्होंने लंदन में अपने होटल व्यवसाय से कमाया। एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे, डैनी लेंबो की दो बहनें और एक भाई हैं, उन्होंने 16 साल की उम्र में स्कूल छोड़ दिया और गायन को एक पेशे के रूप में अपना लिया, जिसके लिए उन्हें कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा, यहां तक कि एक शिक्षक ने उन्हें एक बेकार व्यक्ति भी कहा।

लेबनान के जज नवाफ सलाम अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के अध्यक्ष चुने गए:-

बेरुत (एजेंसी) इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि लेबनान के जज नवाफ सलाम को कोर्ट का अध्यक्ष चुना गया है। अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसी के मुताबिक, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के अध्यक्ष, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के थे, उनकी जगह अब लेबनान के जज नवाफ सलाम लेंगे। नवाफ सलाम 2018 से अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के सदस्य हैं और उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में लेबनान के राजदूत के रूप में भी काम किया है। नवाफ सलाम लेबनान में राजनीतिक रूप से भी सक्रिय रहे हैं और लेबनान के प्रधान मंत्री के संभावित उम्मीदवार रहे हैं लेकिन हिजबुल्लाह के विरोध की वजह से वह नाकाम हो गये थे।

❖❖❖

अहले खैर हज़रात की खिद्मत में

रमजानुल मुबारक 2024 में नदवतुल उलमा के लिए माली तआ़वुन हासिल करने की ग़रज़ से जिन असातिजह, कारकुनान व मुहस्सिलीन को जिस शहर या इलाक़े में भेजा जा रहा है, उसकी तफ़्सील नीचे दी जा रही है, अहले खैर हज़रात से तआ़वुन की दरख़्वास्त है।

–मौलाना फ़ख़रुल हसन खाँ नदवी,
(नाजिर शो–बए–तामीर व तरक्की नदवतुल उलमा, लखनऊ)

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं0	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
1	कारी फ़ज्लुर्रुहमान सा0 नदवी	9919490477	उस्ताद हिफ़्ज़	मुम्बई
2	हाफिज अब्दुल वासे साहब	9307884504	उस्ताद हिफ़्ज़	धूलिया, भिवन्डी, मालेगांव
3	मौ0 अब्दुल वकील साहब नदवी	9889840219	कारकुन शो–बए–इस्लाह मुआशरा	मुम्बई
4	मौ0 मुहम्मद इस्माइल सा0 न0	8604346170	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मुम्बई
5	मौ0 अब्दुल्लाह साहब नदवी	7499549301	कारकुन द0 दारुल उलूम	मुम्बई न्यु मुम्बई
6	मौ0 मुहम्मद असलम साहब मजाहिरी	9935219730	उस्ताद दारूल उलूम	मद्रास, विजयवाड़ा
7	मौ0 मुहम्मद इरफान सा0 नदवी	7505873005	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	मद्रास, विजयवाड़ा
8	मौ0 शफीक अहमद साहब बांदवी नदवी	9935997860	उस्ताद माहद दारूल उलूम (सिकरौरी)	पटटन, पालनपुर व अतराफ
9	मौ0शमीम अहमद साहब नदवी	9935987423	उस्ताद दारूल उलूम	हैदराबाद, निजामाबाद, नान्देड़
10	मौ0 अनीस अहमद साहब नदवी	9450573107	उस्ताद दारूल उलूम	भटकल, शिमूगा टुमकूर, मन्की, मुरड़ेश्वर
11	मौ0 रशीद अहमद साहब नदवी	7795864313	उस्ताद दारूल उलूम	बंगलूर
12	मौ0 जुहैर अहसन साहब नदवी	7355595278	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	बंगलूर
13	मौ0 मुफ़्ती मु0 मुस्तकीम सा0न0	9889096140	उस्ताद दारूल उलूम	आसनसोल, कोलकाता
14	मौ0मुफ़्ती साजिद अली सा0 नदवी	8960204060	मुआविन इल्मी दारूलकज़ा	आसनसोल, कोलकाता
15	क़ारी अब्दुल्लाह खाँ सा0 नदवी	9839748267	उस्ताद तजवीद दारूलउलूम	देहली
16	मौ0 मुहम्मद शुऐब नदवी	6394260480	मुहस्सिल शोबा	बनारस, भदोही, मिरजापुर
17	मौ0 मसऊद अहमद सा0 नदवी	9795715987	उस्ताद माहद (सिकरौरी)	कानपुर
18	मौ0 शकील अहमद सा0 नदवी	9305418153	कारकुन शिब्ली लाइब्रेरी	इलाहाबाद
19	मौ0 मुहम्मद अमजद सा0 नदवी	9616514320	उस्ताद दारूल उलूम	संभल व अतराफ
20	मौ0 जमाल अहमद साहब नदवी	9450784350 9807494150	कारकुन शो–बए–दावत व इरशाद	सुल्तानपुर, अमेठी व मुगलसराय
21	मौ0 मुहम्मद नसीम साहब नदवी	9670049411	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	कानपुर, सन्डीला, गौसगंज, शाहजहांपुर
22	मौ0 बशीरुद्दीन साहब	9889438910	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर

क्रमांक	अस्माए गिरामी (नाम)	मोबाइल नं0	उहदा (पद)	इलाक़ा या शहर
23	मौ0 इम्तियाज साहब नदवी	9984070892	उस्ताद माहद (महपतमऊ)	लखनऊ शहर
24	हाफिज़ मुबीन अहमद साहब	9839588696	उस्ताद मक्तब	लखनऊ शहर
25	मौ0 अब्दुल मतीन साहब नदवी	9450970865	उस्ताद दारूल उलूम	रामपुर, अमरोहा, मुरादाबाद
26	मौ0 मु0 इकराम साहब नदवी	9839840206	मुहस्सिल शोबा	आसनसोल, कोलकाता
27	मौ0 शरफुद्दीन साहब नदवी	9936740835	मुहस्सिल शोबा	नागपुर, भोपाल, कानपुर
28	क़ारी माजिद अली साहब नदवी	9044088886	मुहस्सिल शोबा	सीतापुर, भोपाल, इन्दौर,उज्जैन
29	मौ0 साजिद अली साहब नदवी	8400015009	मुहस्सिल शोबा	कर्नाटक, आंबूर व गाजियाबाद
30	मौ0 अलीमुल्लाह साहब नदवी	9721413704	मुहस्सिल शोबा	मुम्बई, बस्ती, गोण्डा
31	मौ0 मुहम्मद रिजवान साहब कासमी	8401801990	मुहस्सिल शोबा	अहमदाबाद व दीगर अजला गुजरात
32	हाफिज़ अमीन असग़र साहब	9161219358	मुहस्सिल शोबा	अलीगढ़, आगरा, सहारनपुर, फिरोज़ाबाद, बुलन्दशहर, सिकन्द्राबाद
33	मौ0 अलीमुद्दीन साहब नदवी	8853258362	मुहस्सिल शोबा	खन्डवा, रतनागिरी, पूना, सितारा, कोल्हापुर, सूरत
34	मौ0 मुहम्मद मुस्लिम साहब मजाहिरी	8960513186	मुहस्सिल शोबा	औरंगाबाद, जालना, पूना, अहमदनगर, मुजफ्फरनगर, बनारस, मेरठ, बिजनौर, नजीबाबाद
35	डॉ0 मुहम्मद असलम साहब नदवी	9956223293	उस्ताद माहद	पट्टन व आस पास
36	मौ0 अब्दुर्रहीम साहब नदवी	7388509803	मुहस्सिल शोबा	बाराबंकी, झांसी, मऊ, आजमगढ़ व अतराफ
37	मौ0 अब्दुल माजिद खाँ साहब	9918128885	मुहस्सिल शोबा	देहली
38	मौ0 मुहम्मद अक़ील साहब नदवी	9389868121	उस्ताद मक्तब शहर	सीवान, चम्पारन, दरभंगा, समस्तीपुर, पटना
39	मौ0 अबुल हयात सा0 नदवी	9795891123	उस्ताद मक्तब शहर	पटना व अतराफ
40	मौ0 अब्दुल कबीर साहब फारूक़ी	8853677677	उस्ताद मक्तब (महपतमऊ)	काकोरी व अतराफ लखनऊ

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR **DONATION**

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)
WEBSITE: WWW.NADWA.IN
Email : nizamat@nadwa.in

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतिया)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
ONLINE DONATION LINK
https://www.nadwa.in/donation

UPI करते समय रिमार्क में मद (अतिया/ज़कात/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।
नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 23 - Issue 01

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3